وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद
उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -28-29

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028
23-30 मोहर्रम 1447 हिज्री कमरी, 09-16 वफ़ा 1405 हिज्री शम्सी, 09-16 जुलाई 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَخُوۡنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوۡلَ وَتَخُوۡنُوۡۤا اَمٰنٰتِكُمۡ وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ (الانفال:28)

अनुवाद : हे ईमान लाने वालो! अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत (विश्वासघात) न करो, वरना उसके परिणामस्वरूप तुम स्वयं अपनी अमानतों में भी ख़ियानत करने लगोगे, जबकि तुम यह बात जानते होगे।

विश्वासघात करना मुनाफ़िक़ (कपटी) की निशानियों में से एक निशानी है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

عَنۡ عَبۡدِ اللّٰہِ بۡنِ عَمۡرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ: "أَرۡبَعٌ مَنۡ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا، وَمَنۡ كَانَتۡ فِيهِ خَلَّةٌ مِنۡهُنَّ، كَانَتۡ فِيهِ خَلَّةٌ مِنۡ نِفَاقٍ حَتّٰى يَدَعَهَا، إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخۡلَفَ، وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ". غَيۡرَ أَنَّ فِي حَدِيثِ سُفۡيَانَ: وَإِنۡ كَانَتۡ فِيهِ خَصۡلَةٌ مِنۡهُنَّ، كَانَتۡ فِيهِ خَصۡلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ.

विश्वासघात करना मुनाफ़िक़ (कपटी) की निशानियों में से एक निशानी है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"चार ऐसी निशानियाँ हैं कि जिस व्यक्ति में वे हों, वह पूरा मुनाफ़िक़ (कपटी) होता है। और जिस व्यक्ति में इनमें से एक निशानी भी हो, उसमें निफ़ाक़ (कपट) की एक आदत होती है, जब तक कि वह उसे छोड़ न दे।

वे चार बातें ये हैं:

1. जब उसके पास अमानत रखी जाए या उसे किसी बात का भरोसा दिया जाए, तो वह विश्वासघात करता है। 2. जब बात करता है, तो झूठ बोलता है। 3. जब किसी से वादा या समझौता करता है, तो उसे तोड़ देता है। 4. और जब किसी से झगड़ा करता है, तो गाली-गलौज पर उतर आता है।"

(संदर्भ: सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: मुनाफ़िक़ की विशेषताओं का बयान)

ईमानदारी में ही इंसान की असली खूबसूरती है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

“हर मोमिन की यही हालत होती है। यदि वह पूरे दिल से, सच्चे मन से और वफ़ादारी के साथ अल्लाह का हो जाता है, तो अल्लाह तआला उसका संरक्षक (वली) बन जाता है। लेकिन यदि ईमान की इमारत कमज़ोर और खोखली है, तो निस्संदेह ख़तरा बना रहता है। हम किसी के दिल का हाल नहीं जानते। दिलों का असली हाल तो केवल अल्लाह तआला ही जानता है। लेकिन इंसान अपनी बेईमानी और ख़यानत के कारण पकड़ लिया जाता है।

यदि अल्लाह तआला के साथ उसका संबंध साफ़ और सच्चा नहीं है, तो फिर बैअत भी उसे कोई लाभ नहीं देगी और न ही कोई दूसरी चीज़। लेकिन जब इंसान पूरी तरह केवल अल्लाह का हो जाता है, तब अल्लाह तआला उसकी विशेष रूप से रक्षा करता है। यद्यपि वह सबका अल्लाह है, लेकिन जो लोग अपने आपको पूरी तरह उसी के लिए समर्पित कर देते हैं, उन पर वह अपनी विशेष कृपा और अनुकंपा प्रकट करता है।

और अल्लाह के लिए विशेष होने का अर्थ यही है कि इंसान का अहंकार (नफ़्स) पूरी तरह टूट जाए और उसका कोई अंश भी बाकी न रहे।

इसी कारण मैं अपनी जमाअत से बार-बार कहता हूँ कि केवल बैअत पर कभी

शेष 15पर

अमानतदारी के मामले में अल्लाह का तक़्वा अपनाना चाहिए

दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-बक़रह की आयत संख्या 284 की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं:

فَاِنۡ اَمِنَ بَعۡضُكُمۡ بَعۡضًا فَلۡيُؤَدِّ الَّذِي اؤۡتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلۡيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ

अर्थात यदि तुममें से कोई व्यक्ति अपने भाई पर भरोसा करे और उसे बिना गिरवी के धन उधार दे दे, तो जिस व्यक्ति को धन दिया गया है और जिसे भरोसेमंद समझा गया है, उसका कर्तव्य है कि जब दूसरा व्यक्ति अपना धन माँगे तो बिना किसी बहाने के उसे वापस कर दे और अल्लाह तआला का तक़्वा अपनाए।

इस स्थान पर क़र्ज़ को अमानत कहा गया है। इसमें यह गहरी शिक्षा है कि दुनिया में सामान्य रूप से लोग अमानत लौटाना तो आवश्यक समझते हैं, लेकिन क़र्ज़ लौटाने के मामले में बिना कारण लापरवाही और ढिलाई से काम लेते हैं। इसलिए फ़रमाया गया कि अल्लाह तआला की नज़र में क़र्ज़ भी अमानत का ही एक प्रकार है।

...इस आयत से हर प्रकार की अमानत की रक्षा करने और समय पर उसे वापस करने का भी एक सामान्य सबक मिलता है। इसी ओर क़ुरआन करीम की एक दूसरी आयत:

{وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ} (अल-मोमिनून: 9)

में भी संकेत किया गया है और यह शिक्षा दी गई है कि सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह भी है कि लोग अपनी

शेष 15पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल में प्रकाशित हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) के उत्तरों से चयन

बुनियादी सवालों के जवाब

प्रश्न: केरल (भारत) से एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में लिखा कि हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) ने सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन में हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) की घटना के बारे में लिखा है कि फ़रिश्ते द्वारा एड़ी मारने से पानी का चश्मा निकला। जबकि मैंने बचपन से आज तक यही पढ़ा है कि हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के पैर मारने से चश्मा निकला था। कृपया इस बारे में मार्गदर्शन करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने दिनांक 17 दिसंबर 2023 के पत्र में इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित मार्गदर्शन प्रदान किया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: इसमें परेशान होने वाली कोई बात नहीं है। हदीस, इतिहास, सीरत और तफ़्सीर की किताबों में दोनों प्रकार की बातें मिलती हैं। इसलिए लिखा है कि यह चश्मा वहाँ निकला जहाँ फ़रिश्ते ने अपनी एड़ी या अपने पर/पंख से ज़मीन को कुरेदा था।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल अंबिया, बाब: وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبۡرٰهِيۡمَ خَلِيۡلًا)

और यह भी लिखा है कि यह चश्मा वहाँ से निकला जहाँ हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) तेज़ प्यास के कारण रोते हुए अपनी एड़ियाँ मार रहे थे।

(तफ़्सीर अल-तबरी, जिल्द 13, पृष्ठ 272, प्रकाशित: दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, लेबनान, 2001, सूरह इब्राहीम आयत 38। अल-कामिल फ़ित्तारीख़, लेखक: मुहम्मद इब्न अल-असीर अल-जज़री, वफ़ात 630 हिजरी, जिल्द 1, पृष्ठ 80, प्रकाशित: दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, लेबनान, 1971)

इसलिए, चूँकि पहले की किताबों में दोनों तरह की रिवायतें मौजूद हैं, इसलिए जमाअत की किताबों में भी दोनों प्रकार के मत बयान किए गए हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) तफ़्सीर-ए-कबीर में एक जगह फ़रमाते हैं कि उस (फ़रिश्ते) ने कहा, "हाजरा! जाओ और देखो कि इस्माईल के पैरों के नीचे अल्लाह तआला ने एक चश्मा निकाल दिया है।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 3, पृष्ठ 73, प्रकाशित यू.के., 2023)

और एक दूसरी जगह फ़रमाते हैं कि "इस्माईल" शब्द سَمِعَ से बना है। इसमें यह बताया गया था कि अल्लाह उसकी दुआ सुनेगा। इसलिए हज़रत इस्माईल ने पैर मारे और चश्मा फूट पड़ा।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 7, पृष्ठ 324, प्रकाशित यू.के., 2023)

और जैसा कि आपने अपने पत्र में लिखा है कि हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ि.) ने सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन में इस घटना के बारे में लिखा है कि जब हाजरा की बेचैनी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई, तो सातवें चक्कर के बाद उन्हें एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी:

"ऐ हाजरा! अल्लाह ने तेरी और तेरे बच्चे की आवाज़ सुन ली है।"

यह आवाज़ सुनकर जब वे वापस आईं, तो जहाँ बच्चा तेज़ प्यास के कारण बेचैनी की हालत में तड़प रहा था, वहाँ उन्होंने एक फ़रिश्ते को खड़ा देखा, जो अपने पैर की एड़ी इस तरह ज़मीन पर मार रहा था, मानो कोई चीज़ खोदकर निकाल रहा हो। हज़रत हाजरा आगे बढ़ीं तो जहाँ वह एड़ी मार रहा था, वहाँ उन्होंने एक चश्मा देखा, जिससे पानी ज़ोर-ज़ोर से निकलकर बह रहा था। (सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन, पृष्ठ 75)

अतः इस घटना के बारे में दोनों प्रकार की रिवायतें मिलती हैं। इनसे यह निष्कर्ष भी निकाला जा सकता है कि जिस स्थान पर हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) तेज़ प्यास के कारण एड़ियाँ मार रहे थे, उसी स्थान पर फ़रिश्ते ने भी एड़ी मारी हो, और चश्मा उसी जगह से निकला हो जहाँ दोनों ने अपनी-अपनी एड़ियाँ मारी थीं।

سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ

प्रश्न: कनाडा से एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में लिखा कि "سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ" वाली दुआ और दुरूद शरीफ़ का सही अर्थ और भाव क्या है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने दिनांक 28 दिसंबर 2023 के पत्र में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर प्रदान किया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: "سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ" की दुआ में अल्लाह तआला की पवित्रता और उसकी प्रशंसा का वर्णन किया गया है। इसका अनुवाद यह है कि:

अल्लाह तआला की सत्ता हर प्रकार के दोषों और कमियों से पाक है, और हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान उसी के लिए है तथा उसी को शोभा देता है।

हदीस में इस दुआ की बहुत अधिक फ़ज़ीलत (महिमा) बयान हुई है। इसलिए हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

दो ऐसे कलिमे हैं जो अल्लाह तआला को बहुत प्रिय हैं। ये कलिमे ज़ुबान पर बहुत हल्के हैं (अर्थात इन्हें पढ़ना बहुत आसान है), लेकिन क़ियामत के दिन कर्मों के तराज़ू में बहुत भारी होंगे। और वे मुबारक कलिमे ये हैं:

سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ سُبۡحَانَ اللّٰهِ الۡعَظِيۡمِ

(सहीह बुख़ारी, किताबुद-दआवात, बाब: फ़ज़्लुत-तस्बीह)

इसके अलावा हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को भी इल्हाम के माध्यम से यह दुआ सिखाई गई थी, जिसके साथ दुरूद शरीफ़ का भाग भी शामिल है। इसलिए हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"जिस प्रकार अल्लाह तआला ने मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिए अपने कुछ नबियों को दुआएँ सिखाई थीं, उसी प्रकार मुझे भी अल्लाह ने इल्हाम के द्वारा एक दुआ सिखाई, और वह यह है:

سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم اللّٰھم صلّ علی محمّد وآل محمّد

(तिरयाक़ुल-क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 15, पृष्ठ 208, हाशिया)

जहाँ तक मस्नून दुरूद शरीफ़ का संबंध है, तो यह हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र हस्ती पर रहमत और बरकत नाज़िल होने के लिए अल्लाह तआला के सामने की जाने वाली दुआ है, जिसका आदेश अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन करीम में दिया है। जैसा कि फ़रमाया:

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوۡنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَيۡهِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِيۡمًا ۔ (الأحزاب:57)

अर्थ: निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते इस नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान लाने वालो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो और पूरे आदर के साथ सलाम भेजो।

इस मस्नून दुरूद शरीफ़ का अनुवाद यह है कि:

हे अल्लाह! तू मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनकी आल (परिवार) पर उसी प्रकार अपनी रहमत नाज़िल कर, जिस प्रकार तूने हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उनकी आल पर रहमत नाज़िल की। निस्संदेह तू बहुत प्रशंसा वाला और बड़ी महानता वाला है। हे अल्लाह! तू मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनकी आल पर उसी प्रकार बरकत नाज़िल कर, जिस प्रकार तूने हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उनकी आल पर बरकत नाज़िल की। निस्संदेह तू बहुत प्रशंसा वाला और बड़ी महानता वाला है।

इस दुरूद में اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ और اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ जो अलग-अलग आए हैं, उनकी व्याख्या मैं अपने विभिन्न ख़ुत्बों और भाषणों में कर चुका हूँ। यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ की दुआ का अर्थ यह है कि:

हे अल्लाह! तू मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस दुनिया में उनका नाम ऊँचा करके, उनके संदेश को सफलता और विजय देकर तथा उनकी शरीअत को स्थायित्व और हमेशा बने रहने वाला बनाकर महानता प्रदान कर। और आख़िरत में उनकी उम्मत के हक़ में उनकी सिफ़ारिश स्वीकार करके तथा उनके प्रतिफल और पुण्य को कई गुना बढ़ाकर उन्हें महान सम्मान प्रदान कर।

और اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ का अर्थ यह है कि:

हे अल्लाह! तूने जो भी सम्मान, महानता, ऊँचा दर्जा और श्रेष्ठता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए निर्धारित की है, उसे उनके लिए हमेशा कायम रख और उसे स्थायी तथा सदा रहने वाली बना दे। वह हमेशा बनी रहने वाली हो।

इसका सार यह है कि اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ में आपकी शरीअत की विजय, उसके हमेशा बने रहने तथा आपकी उम्मत के लिए आपकी सिफ़ारिश से लाभ प्राप्त करने की दुआ है। और اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ में आपके सम्मान, महानता, उच्च पद और श्रेष्ठता के हमेशा बने रहने की दुआ की गई है।

हदीसों में दुरूद शरीफ़ की बहुत अधिक महिमा और फ़ज़ीलत बयान हुई है। इसलिए हज़रत उबय्य बिन काब (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में अर्ज़ किया:

मैं बहुत अधिक आप पर दुरूद भेजता हूँ। तो मैं अपनी दुआ का कितना हिस्सा आपके लिए निर्धारित करूँ?

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जितना चाहो। मैंने अर्ज़ किया: क्या एक चौथाई?

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जितना चाहो, लेकिन यदि इससे अधिक करोगे तो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

मैंने अर्ज़ किया: क्या आधा हिस्सा?

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जितना चाहो, लेकिन यदि इससे भी अधिक करोगे तो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

मैंने अर्ज़ किया: क्या दो-तिहाई?

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जितना चाहो, लेकिन यदि इससे भी अधिक करोगे तो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

मैंने अर्ज़ किया:

अब से मैं अपनी पूरी दुआ ही आपके लिए निर्धारित कर दूँगा।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

फिर इसके परिणामस्वरूप तुम्हारी दुनिया और आख़िरत की सभी इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दिए जाएँगे।

(सुनन तिर्मिज़ी, किताब: सिफ़तुल क़ियामह व अर-रक़ाइक़ व अल-वरा', बाब: मा जा फ़ी सिफ़ति अवानी अल-हौज़)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) दुरूद शरीफ़ की महिमा बताते हुए फ़रमाते हैं:

"एक बार ऐसा हुआ कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने, अर्थात आंहज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने में मैं एक लंबे समय तक पूरी तरह तल्लीन रहा। क्योंकि

ख़ुत्बः जुमअः

विनम्रता और नम्र स्वभाव के संबंध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के श्रेष्ठ चरित्र का मन को छू लेने वाला वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 मई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन के जिस पहलू, अर्थात विनम्रता और नम्र स्वभाव का उल्लेख हो रहा था, आज भी उसी का वर्णन है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विनम्रता का स्तर क्या था? आप छोटी-छोटी बातों के उदाहरण देकर स्वयं उसका प्रदर्शन किया करते थे।

इसलिए हज़रत यहया बिन अबी कसीर (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"मैं उसी तरह खाना खाता हूँ जैसे एक गुलाम खाता है और उसी तरह बैठता हूँ जैसे एक गुलाम बैठता है, क्योंकि मैं भी तो अल्लाह का एक बंदा ही हूँ।"

(अल-जामिअ लि-शुअबिल ईमान, इमाम बैहक़ी, भाग 8, पृष्ठ 116, रिवायत संख्या 5572, मक्तबतुर-रुश्द, रियाद, 2003)

अर्थात, सरदारों और अमीरों वाला घमंड, अहंकार और दिखावा मेरे अंदर नहीं है।

इसी प्रकार एक और रिवायत है। हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक ऊँटनी थी, जिसका नाम अज़्बा था। वह इतनी तेज़ थी कि कोई दूसरा ऊँट उससे आगे नहीं निकल सकता था।

एक बद्दू अपने एक जवान ऊँट पर सवार होकर आया और दौड़ में उसका ऊँट अज़्बा से आगे निकल गया। यह बात मुसलमानों को बहुत बुरी लगी कि अज़्बा पीछे रह गई। वे कहने लगे कि तुम आगे निकल गए हो, या यदि आगे निकल भी रहे थे तो रुक जाते, क्योंकि यह रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी थी।

लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके इस व्यवहार पर फ़रमाया:

"अल्लाह का नियम है कि जिस चीज़ को वह दुनिया में ऊँचा उठाता है, उसे एक दिन नीचे भी दिखाता है।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुर-रिक़ाक़, बाबुत-तवाज़ु', हदीस संख्या 6501)

इसमें गुस्सा होने जैसी कोई बात नहीं है। यह तो अल्लाह तआला का तरीका ही है। जो चीज़ें ऊपर जाती हैं, वे नीचे भी आती हैं।

साधारण लोग ऐसी बात पर ईर्ष्या करने लगते हैं, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने हमेशा अल्लाह तआला की महान सत्ता रहती थी और आप केवल उसी की महानता दुनिया को दिखाना चाहते थे।

देखिए, कितनी विनम्रता से आप फ़रमाते हैं कि इसमें गुस्सा होने की क्या बात है? इसकी कोई ज़रूरत नहीं। इससे तो अल्लाह तआला की महानता ही प्रकट होती है।

फिर विनम्रता का एक और उदाहरण हज़रत उमर (रज़ि.) बयान करते हैं। वे कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उमरा करने की अनुमति माँगी। आपने अनुमति प्रदान की और फ़रमाया:

"ऐ मेरे भाई! अपनी दुआ में मुझे मत भूलना।"

हज़रत उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी बात कही थी कि यदि इसके बदले मुझे पूरी दुनिया भी मिल जाती, तब भी मुझे इतनी ख़ुशी न होती।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-वित्र, बाबुद-दुआ, रिवायत संख्या 1498)

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजना आवश्यक ठहराया है और दुआ की स्वीकृति के लिए भी इसे आवश्यक बताया है। लेकिन विनम्रता की पराकाष्ठा देखिए कि आप अपने एक अनुयायी से फ़रमा रहे हैं कि मेरे लिए भी दुआ करना।

आप किसी भी काम को करने में कभी संकोच नहीं करते थे। बल्कि छोटे से छोटा काम भी स्वयं करके लोगों को दिखाते थे और उन्हें सिखाते भी थे।

इसलिए एक रिवायत है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक लड़के के पास से गुज़रे, जो एक बकरी की खाल उतार रहा था। आपने उसे एक ओर किया और फ़रमाया:

"ज़रा पीछे हटो, ताकि मैं तुम्हें सही तरीका दिखाऊँ, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि तुम्हें खाल उतारने का पूरा अनुभव है।"

फिर आपने अपना हाथ खाल और मांस के बीच डाला और उसे अंदर तक ले गए, यहाँ तक कि हाथ बगल तक पहुँच गया। फिर आपने फ़रमाया:

"ऐ लड़के! इस तरह खाल उतारो।"

आपने उसका पूरा काम भी किया और उसे सिखाया भी।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुत-तहारत, बाब: वुज़ू मिन मस्सिल-लहम..., हदीस संख्या 185)

इसी प्रकार विनम्रता के साथ दूसरों का काम करने की एक और रिवायत है।

हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि.) की बेटी से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक बकरी लाई ताकि उसका दूध दुहा जाए।

आपने बकरी को बाँधा और उसका दूध दुहा। फिर आपने फ़रमाया:

"अपना बड़ा बर्तन मेरे पास लाओ।"

वह एक बर्तन लेकर आई। आपने फ़रमाया:

"नहीं, इससे बड़ा बर्तन लाओ।"

तब मैं एक बड़ा बर्तन लाई। आपने उसमें दूध दुहा, यहाँ तक कि वह पूरा भर गया। फिर आपने फ़रमाया:

"ख़ुद भी पियो और अपने पड़ोसियों को भी पिलाओ।"

(मुस्नद अबी दाऊद अत-तयालसी, जिल्द 3, पृष्ठ 239–240, हदीस संख्या 1768, दार हिज्र, मिस्र, 1999)

निश्चय ही आपको यह विचार होगा कि आपकी दुआ की बरकत से उस दूध में असाधारण वृद्धि हुई थी। इसलिए आपने उनसे फ़रमाया कि इस बरकत का लाभ दूसरों को भी दो। उस समय बकरी से सामान्य से लगभग दोगुना दूध निकला।

सलाम करने और सभा में बैठने के बारे में भी आपकी विनम्रता और उच्च चरित्र का सुंदर उदाहरण मिलता है।

इसलिए हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि जब कोई व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता, तो आप उससे मुसाफ़ह़ा (हाथ मिलाते) करते। आप अपना हाथ उसके हाथ से तब तक नहीं हटाते थे, जब तक वह व्यक्ति स्वयं अपना हाथ न हटा ले।

इसी प्रकार आप अपना मुबारक चेहरा उस व्यक्ति के चेहरे से तब तक नहीं फेरते थे, जब तक वह स्वयं अपना चेहरा न फेर ले।

और आपको कभी इस अवस्था में नहीं देखा गया कि आप अपने साथ बैठने वाले के सामने अपने घुटने आगे बढ़ाकर बैठे हों।

(जामे तिर्मिज़ी, किताब: सिफ़तुल-क़ियामह व अर-रक़ाइक़, बाब 46, हदीस संख्या 2490)

एक रिवायत है। हज़रत अबू मुसन्ना अमलूकी (रज़ि.) से रिवायत है। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपसे पहले के नबी (अलैहिमुस्सलाम) लाठी के सहारे चलते थे और उसी पर टेक लगाते थे।

(सुबुलुल हुदा वर-रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 32, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

यह लाठी इसलिए नहीं होती थी कि लोगों पर रोब डाला जाए या अपनी बड़ाई दिखाई जाए, बल्कि यह अल्लाह तआला के सामने विनम्रता और नम्र स्वभाव का प्रतीक होती थी। और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विनम्रता तो सबसे बढ़कर थी।

फिर आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों को विनम्रता की शिक्षा भी बड़े बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से देते थे।

इसलिए एक रिवायत है। इब्न हज़्न बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने ऊँट पालने वालों और बकरियाँ पालने वालों के बीच अपनी-अपनी श्रेष्ठता को लेकर बहस हो रही थी।

जिन लोगों के पास अधिक ऊँट थे, वे कहते थे कि हम तुमसे बड़े हैं और हमारा माल भी अधिक है।

बकरियाँ पालने वाले कहते थे कि हम अधिक हैं।

जब यह बहस चल रही थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ पहुँचे और फ़रमाया:

"हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) नबी बनाकर भेजे गए थे और वे बकरियाँ चराते थे। हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) भी नबी बनाकर भेजे गए थे और वे भी बकरियाँ चराते थे। और मुझे भी नबी बनाकर भेजा गया है तथा मैं भी अपने परिवार की बकरियाँ 'अज्याद' नामक स्थान पर चराया करता था।"

(अस-सुननुल कुबरा लिन्नसाई, किताबुत-तफ़्सीर, सूरह ताहा, हदीस संख्या 11262, जिल्द 10, पृष्ठ 171–172, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 2001)

इस प्रकार आपने घमंड करने वालों को भी नसीहत कर दी और जिन लोगों को छोटा समझा जा रहा था, अर्थात बकरियाँ पालने वालों को भी सम्मान और दिलासा दे दिया।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस अज्याद का उल्लेख किया है, वह मक्का में सफ़ा के निकट एक स्थान है। इस स्थान को जियाद भी कहा जाता है।

(मुअजमुल बुलदान, जिल्द 1, पृष्ठ 130)

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में तनिक भी घमंड नहीं था। आप गरीब लोगों से भी पूरी विनम्रता से मिलते थे और उनका दिल रखते थे।

इसलिए हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि गाँव में रहने वालों में एक व्यक्ति थे, जिनका नाम ज़ाहिर (रज़ि.) था। वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए गाँव की भेंटें लाया करते थे। गाँव की जो भी अच्छी चीज़ें होतीं, वे उन्हें लेकर आते थे।

और जब वे वापस जाने लगते तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उन्हें पर्याप्त सामान और उपहार देकर विदा करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे:

"ज़ाहिर हमारे गाँव में रहने वाले मित्र हैं और हम उनके शहर में रहने वाले मित्र हैं।"

एक दिन ज़ाहिर (रज़ि.) बाज़ार में अपना कुछ सामान बेच रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ पहुँचे और पीछे से उन्हें अपने सीने से लगा लिया।

हज़रत ज़ाहिर (रज़ि.) आपको देख नहीं पा रहे थे। उन्होंने कहा:

"कौन है? मुझे छोड़ दो।"

लेकिन जब उन्होंने मुड़कर देखा और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचान लिया, तो वे अपनी पीठ को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक सीने से और अधिक लगाने लगे।

तब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मज़ाक में कहना शुरू किया:

"कौन है जो इस ग़ुलाम को खरीदेगा?"

हज़रत ज़ाहिर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया:

"या रसूलल्लाह! तब तो आप मुझे घाटे का सौदा पाएँगे। मुझे कौन खरीदेगा?"

इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"नहीं, अल्लाह की नज़र में तुम घाटे का सौदा नहीं हो।"

या आपने यह फ़रमाया:

"अल्लाह के यहाँ तुम्हारी बहुत बड़ी क़ीमत है।"

(सहीह इब्न हिब्बान, किताबुल-हज़्र वल-इबाहा, बाबुल-मिज़ाह वज़-ज़हक, हदीस संख्या 5790, पृष्ठ 1543, दारुल-मआरिफ़ा, 2004)

इसी घटना का उल्लेख एक ख़ुत्बे में करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ि.) ने इस प्रकार फ़रमाया:

"हुज़ूर के एक सहाबी थे जो जन्मजात शारीरिक कमी के कारण बहुत ही बदसूरत थे," अर्थात उनका रूप-रंग अच्छा नहीं था, "और अत्यंत गरीब भी थे। उनका शरीर और कपड़े धूल से भरे रहते थे। उसी अवस्था में वे पसीने से लथपथ बाज़ार में किसी का सामान बेच रहे थे। लेकिन उस सहाबी में एक ऐसी विशेषता थी जिसकी हुज़ूर के दिल में बहुत क़द्र थी।"

अर्थात आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें बहुत सम्मान देते थे।

"उसी समय, जबकि उन्हें स्वयं अपने आप से घृणा आ रही थी," वे सोचते होंगे कि मैं पसीने से भीगा हुआ हूँ, मेरे ऊपर धूल लगी हुई है और शायद स्वयं भी असहज महसूस कर रहे होंगे।

"उसी समय हुज़ूर पीछे से आए और जैसे बच्चों के साथ प्यार से खेला जाता है, उसी तरह अपने दोनों हाथों से उनकी आँखें बंद कर लीं। उन्होंने टटोलकर पहचान लिया कि यह तो हुज़ूर ही के हाथ हैं, क्योंकि हुज़ूर के शरीर पर बाल बिल्कुल नहीं थे या बहुत कम थे और आपका शरीर अत्यंत कोमल था। यह पहचानकर वे भी प्रेम से अपना शरीर हुज़ूर के शरीर से रगड़ने लगे, जिससे हुज़ूर का शरीर और कपड़े भी मैले होने लगे, लेकिन हुज़ूर ने तनिक भी बुरा नहीं माना।"

"हुज़ूर ने उन पर हाथ रखा और फ़रमाया, 'यह मेरा ग़ुलाम है, क्या कोई है जो इसे खरीदे?' इस पर उस सहाबी का दिल भर आया और उन्होंने कहा, 'मेरे मालिक! यह तो एक बेकार और बिना कीमत की चीज़ है, इसे कौन खरीदेगा?' हुज़ूर ने फ़रमाया, 'हरगिज़ नहीं। अल्लाह के नज़दीक इसकी बहुत बड़ी कीमत है।'"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 3, पृष्ठ 663)

हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.), आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उच्च चरित्र, लोगों के साथ आपके विनम्र व्यवहार तथा आपकी प्रभावशाली व्यक्तित्व का चित्र प्रस्तुत करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

मैंने अपने मामा हिंद बिन अबी हाला से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक स्वरूप के बारे में पूछा। वे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वरूप का बहुत सुंदर वर्णन किया करते थे और मैं चाहता था कि वे मेरे सामने उसका कुछ वर्णन करें।

उन्होंने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यंत गरिमामय और आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे। आपका मुबारक चेहरा इस प्रकार चमकता था जैसे चौदहवीं रात का चाँद।

फिर उन्होंने पूरी हदीस विस्तार से बयान की और आपके स्वरूप का संपूर्ण वर्णन किया।

हज़रत हसन (रज़ि.) कहते हैं:

मैंने यह रिवायत, अर्थात जो सारी बातें उन्होंने मुझे बताई थीं, एक लंबे समय तक हज़रत हुसैन (रज़ि.) से छिपाकर रखीं। फिर जब मैंने उन्हें यह सब बताया, तो मालूम हुआ कि वे इस मामले में मुझसे पहले ही जानकारी प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने मुझसे पहले ही वही सब अपने मामा से पूछ लिया था जो मैंने पूछा था। बल्कि यह भी पता चला कि उन्होंने अपने पिता से भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में आने-जाने और आपके स्वरूप के बारे में पूछ लिया था और कोई बात बाकी नहीं छोड़ी थी।

हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि.) फ़रमाते हैं:

मैंने अपने पिता से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में प्रवेश करने के तरीके के बारे में पूछा।

पहले जो बातें थीं, वे घर के बाहर के जीवन से संबंधित थीं। अब घर के अंदर की बातें हैं, जो हज़रत अली (रज़ि.) से पूछी गईं।

उन्होंने फ़रमाया कि जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर तशरीफ़ लाते, तो घर में अपने समय को तीन भागों में बाँट लेते थे। एक भाग अल्लाह तआला की इबादत के लिए निर्धारित करते, एक भाग अपने परिवार के लिए और एक भाग अपने लिए रखते।

फिर अपने लिए रखे हुए भाग को भी अपने और लोगों के बीच बाँट लेते थे। उसमें विशेष सहाबा (रज़ि.) के माध्यम से आम लोगों तक दीन की बातें पहुँचाते और उनसे कोई बात छिपाकर नहीं रखते थे।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत में उम्मत के हिस्से को बाँटने का तरीका यह था कि मिलने की अनुमति देने में आप पहले उन लोगों को प्राथमिकता देते जो ज्ञान और सद्गुण में आगे होते थे। उनकी धार्मिक श्रेष्ठता के अनुसार उन्हें समय दिया जाता था। उनमें से किसी को एक आवश्यकता होती, किसी को दो और किसी को कई आवश्यकताएँ होतीं।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी ज़रूरतें पूरी करने

में लगे रहते और उनके प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्हें ऐसे कामों में लगाते जो उनकी तथा पूरी उम्मत की भलाई और सुधार का कारण बनें। उन्हें ऐसी बातें बताते जो उनके लिए लाभदायक हों। और फ़रमाते:

"तुममें से जो लोग यहाँ उपस्थित हैं, वे इन बातों को अनुपस्थित लोगों तक पहुँचा दें। और जो व्यक्ति अपनी आवश्यकता स्वयं मेरे तक नहीं पहुँचा सकता, उसकी आवश्यकता मुझे पहुँचाओ। क्योंकि जो व्यक्ति किसी ऐसे आदमी की आवश्यकता शासक तक पहुँचाता है, जो स्वयं उसे पहुँचाने की क्षमता नहीं रखता, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसके क़दमों को दृढ़ता प्रदान करेगा।"

इसमें उन अधिकारियों के लिए भी शिक्षा है जो विभिन्न स्थानों पर नियुक्त किए गए हैं कि वे ज़रूरतमंद लोगों की बातें अवश्य केंद्र तक पहुँचाएँ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने ऐसी ही उपयोगी बातें होती थीं और इनके अतिरिक्त किसी से दूसरी प्रकार की बात स्वीकार नहीं करते थे।

लोग आपके पास ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से आते और बिना कुछ सीखे वापस नहीं जाते थे। वे भलाई और नेक मार्ग की शिक्षा लेकर लौटते थे।

हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि.) कहते हैं, फिर मैंने अपने पिता से पूछा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब घर से बाहर निकलते थे तो उस समय क्या करते थे?

उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आवश्यकता और उद्देश्य के बिना कोई बात नहीं करते थे।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के दिलों को जोड़ते थे और उन्हें अपने से दूर नहीं होने देते थे।

हर क़ौम के सम्मानित व्यक्ति का सम्मान करते और उसे उसकी क़ौम का प्रमुख बना देते थे।

आप लोगों को सावधान भी करते और उनसे आवश्यक सावधानी भी बरतते थे, लेकिन इससे आपके मुस्कुराते हुए चेहरे और अच्छे व्यवहार में कोई अंतर नहीं आता था।

अर्थात यदि किसी व्यक्ति के बारे में कोई संदेह होता तो आप लोगों को सावधान भी करते, लेकिन ऐसा नहीं होता था कि उस व्यक्ति के साथ आपका व्यवहार बदल जाए। आप हर व्यक्ति के साथ अच्छे नैतिक व्यवहार से पेश आते थे। हाँ, जहाँ सावधानी की आवश्यकता होती, वहाँ मिलने-जुलने वालों के साथ सावधानी भी बरतते थे, क्योंकि कुछ लोग संदेहास्पद भी होते थे।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने सहाबा पर नज़र रखते थे और लोगों से दूसरे लोगों के हाल पूछते रहते थे।

अच्छी बात की प्रशंसा करते और उसे बढ़ावा देते थे, जबकि बुरी बात की बुराई बताते और उसका प्रभाव समाप्त करने का प्रयास करते थे।

आप हर मामले में संतुलित थे। आपके अंदर किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं था।

आप कभी ग़ाफ़िल नहीं होते थे, कहीं ऐसा न हो कि लोग भी ग़ाफ़िल हो जाएँ या थक जाएँ।

आप हर परिस्थिति के लिए तैयार रहते थे।

न तो आप सत्य से पीछे रहते थे और न ही सत्य से आगे बढ़ते थे। जितना सत्य होता, उतना ही कार्य करते थे।

लोगों में आपके सबसे निकट वही व्यक्ति होता था जो सबसे अधिक श्रेष्ठ होता था।

आपकी नज़र में सबसे श्रेष्ठ वह था जो लोगों की सबसे अधिक भलाई चाहता था।

और आपके निकट सबसे ऊँचा दर्जा उसी का था जो दूसरों के प्रति सबसे अधिक सहानुभूति रखने वाला और उनकी सहायता करने वाला होता था।

सबसे बड़ा दर्जा उसी का होता है जो लोगों के साथ सहानुभूति रखता है और उनकी सहायता करता है। ऐसा व्यक्ति ही आपके सबसे निकट होता था और आपको प्रिय होता था।

हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि.) कहते हैं, फिर मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सभा के बारे में पूछा।

उन्होंने फ़रमाया:

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उठते-बैठते हर समय अल्लाह का ज़िक्र करते थे।

जब किसी सभा में जाते तो जहाँ लोगों की बैठक समाप्त होती, वहीं बैठ जाते और यही शिक्षा भी देते थे।

आप अपने साथ बैठने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उसका पूरा अधिकार देते थे। किसी को यह महसूस नहीं होने देते थे कि कोई दूसरा उससे अधिक सम्मानित है।

जो व्यक्ति आपके पास बैठता और अपनी कोई आवश्यकता बताता, आप उसके साथ तब तक बैठे रहते जब तक वह स्वयं उठकर न चला जाए।

जो व्यक्ति आपसे अपनी आवश्यकता माँगता, उसे बिना कुछ दिए या कम से कम नरमी से उत्तर दिए बिना कभी वापस नहीं भेजते थे।

यदि कोई आवश्यकता लेकर आता तो उसे कुछ न कुछ देते। और यदि देना संभव न होता, तो भी बहुत प्रेम और नम्रता से उत्तर देते थे।

आपकी मुस्कुराहट, आपकी उदारता और आपका श्रेष्ठ चरित्र सभी लोगों के लिए समान था।

आप सबके लिए पिता के समान थे।

अधिकारों के मामले में आपकी नज़र में सभी लोग बराबर थे।

आपकी सभा ज्ञान, लज्जा, धैर्य और अमानतदारी की सभा होती थी।

उसमें न ऊँची आवाज़ें होती थीं, न सम्मानित बातों का अपमान किया जाता था और न किसी की कमज़ोरियों का उल्लेख किया जाता था।

सभी लोग एक-दूसरे के साथ समान व्यवहार करते थे और केवल तक़्वा (धर्मपरायणता) के आधार पर ही किसी को श्रेष्ठ माना जाता था।

आजकल लोग एक-दूसरे की कमज़ोरियाँ बयान करते रहते हैं, लेकिन आपकी सभा में ऐसा कभी नहीं हुआ।

सब लोग एक-दूसरे के साथ विनम्रता से पेश आते थे।

बड़ों का सम्मान करते, छोटों पर दया करते, ज़रूरतमंद को प्राथमिकता देते और अजनबी का भी पूरा ध्यान रखते थे। ऐसा नहीं था कि कोई नया व्यक्ति आए तो उसकी उपेक्षा कर दी जाए, बल्कि उसका भी पूरा ख़याल रखा जाता था।

(शमाइलुन-नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब: मा जा फ़ी तवाज़ु' रसूलिल्लाह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, रिवायत संख्या 321, पृष्ठ 137–140, प्रकाशित: नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"जो लोग अल्लाह की प्रसन्नता में पूरी तरह लीन हो जाते हैं, वे कभी यह नहीं चाहते कि उन्हें कोई पद या नेतृत्व दिया जाए। वे ऐसे पदों की अपेक्षा एकांत में रहकर इबादत करने का आनंद अधिक पसंद करते हैं। लेकिन अल्लाह तआला उन्हें लोगों की भलाई के लिए स्वयं बाहर लाता है और उन्हें नियुक्त करता है।

हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ग़ार (गुफा) में रहा करते थे और यह नहीं चाहते थे कि किसी को उनका पता भी चले। अंततः अल्लाह तआला उन्हें बाहर ले आया और संसार के मार्गदर्शन का दायित्व उनके सुपुर्द कर दिया।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हज़ारों कवि आते थे और आपकी प्रशंसा में कविताएँ सुनाते थे, लेकिन लानत है उस दिल पर जो यह समझता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी प्रशंसा से फूल जाते थे," अर्थात बहुत प्रसन्न होकर घमंड करने लगते थे।

"आप उन प्रशंसाओं को मरे हुए कीड़े के समान समझते थे। वास्तविक प्रशंसा वही होती है जो अल्लाह तआला आकाश से करे। ऐसे लोग अल्लाह के प्रेम में डूबे हुए होते हैं। उन्हें संसार की प्रशंसा और वाहवाही की कोई परवाह नहीं होती। तब उनका ऐसा उच्च स्थान हो जाता है कि स्वयं अल्लाह तआला आकाश और अर्श से उनकी प्रशंसा करता है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 338–339, संस्करण 2022)

फिर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"एक बार एक ईसाई व्यक्ति हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया। हज़रत ने उसकी बड़ी ख़ातिरदारी की। वह बहुत भूखा था। हज़रत ने उसे भरपेट खाना खिलाया। रात को अपनी रज़ाई भी उसे दे दी। जब वह सो गया तो उसे बहुत तेज़ दस्त लग गए और वह उन्हें रोक न सका। उसने रज़ाई में ही शौच कर दिया।

सुबह जब उसकी आँख खुली तो उसने सोचा कि मेरी यह हालत देखकर लोग घृणा करेंगे। शर्म के मारे वह वहाँ से चला गया। जब लोगों ने देखा तो उन्होंने हज़रत से अर्ज़ किया कि जो ईसाई मेहमान था, उसने रज़ाई गंदी कर दी है। उसमें दस्त लगे हुए हैं।

हज़रत ने फ़रमाया, 'वह रज़ाई मुझे दो, मैं उसे साफ़ करूँगा।'

लोगों ने अर्ज़ किया, 'हज़रत! आप क्यों तकलीफ़ उठाते हैं? हम मौजूद हैं, हम उसे साफ़ कर देंगे।'

हज़रत ने फ़रमाया, 'वह मेरा मेहमान था, इसलिए उसे साफ़ करना मेरा ही काम है।'

फिर आप स्वयं उठे, पानी मँगवाया और अपने हाथों से उसे साफ़ करने लगे।"

अर्थात आपने अत्यंत विनम्रता के साथ अपने मेहमान की गंदगी स्वयं साफ़ की।

फिर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) आगे फ़रमाते हैं:

"वह ईसाई लगभग एक कोस दूर निकल गया था कि उसे याद आया कि उसका सोने का क्रॉस चारपाई पर ही रह गया है। इसलिए वह वापस लौटा। उसने देखा कि हज़रत स्वयं उसकी गंदगी रज़ाई से साफ़ कर रहे हैं। यह देखकर उसे बहुत शर्म आई और उसने कहा, 'यदि मेरे पास ऐसा कोई व्यक्ति होता तो मैं कभी उसकी गंदगी साफ़ न करता। इससे मुझे समझ में आ गया कि ऐसा व्यक्ति, जिसमें इतनी निःस्वार्थता, इतनी विनम्रता हो, वह निश्चित रूप से अल्लाह तआला की ओर से है।'

फिर वह इस घटना को देखकर मुसलमान हो गया।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 205–206, संस्करण 2022)

जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पहली वह्यी (अल्लाह तआला के प्रकाशना) उतरी, तब भी आपकी विनम्रता और नम्र स्वभाव का ही प्रदर्शन होता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ग़ारे-हिरा की घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

"सबसे पहली वह्यी ग़ार-ए-हिरा में उतरी थी। जब हज़रत जिब्रील रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने प्रकट हुए और उन्होंने कहा: 'اِقْرَاْ' अर्थात 'पढ़ो।'

इसके उत्तर में रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'مَا اَنَا بِقَارِئٍ' अर्थात 'मैं पढ़ना नहीं जानता।'

इसका अर्थ यह था कि यह भारी ज़िम्मेदारी मुझ पर न डाली जाए। उस समय आपके सामने कोई पुस्तक तो रखी नहीं गई थी जिसे आपको पढ़ना था, बल्कि जिब्रील जो कुछ बताते, वही आपको ज़बानी कहना था। यह तो आप कह सकते थे, लेकिन आपने अत्यंत विनम्रता दिखाई।

परंतु चूँकि अल्लाह तआला ने इसी कार्य के लिए आपको चुना था, इसलिए बार-बार कहा गया, "पढ़ो।"

आख़िर तीसरी बार कहने पर आपने पढ़ा और फिर फ़रिश्ते ने आपको यह आयत पढ़ाई:

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ

"पढ़ो, अपने उस पालनहार के नाम के साथ जिसने पैदा किया।"

(फ़ज़ाइलुल-कुरआन, भाग 2, अनवारुल-उलूम, जिल्द 11, पृष्ठ 109)

इसी घटना के बारे में एक अन्य स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ि.) ने तफ़्सीर-ए-कबीर में, संभवतः सूरह कौसर की तफ़्सीर के अंतर्गत, लिखा है:

"जब आप पर वह्यी उतरी तो आपने असाधारण विनम्रता का प्रमाण दिया। हम देखते हैं कि यदि दूसरे लोगों को कोई इल्हाम हो जाए या कोई सपना आ जाए तो वे तुरंत दूसरों के पास दौड़ते हैं और बताते हैं कि हमें यह इल्हाम हुआ है या यह सपना आया है।

लेकिन जब आपके पास जिब्रील आए और उन्होंने कहा: 'اِقْرَاْ' (पढ़ो), तो आपने फ़रमाया: 'مَا اَنَا بِقَارِئٍ' अर्थात 'मैं तो पढ़ना नहीं जानता।'

आपने तीन बार यही कहा।

लेकिन जब आपने देखा कि अल्लाह तआला की ओर से इस बात पर ज़ोर दिया जा रहा है, तब आपने उस आदेश का पालन किया। और ऐसी हिम्मत के साथ किया कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरह यह नहीं कहा कि 'हे मेरे रब! मेरे साथ किसी और सहायक को भी भेज दे।' बल्कि आपने अकेले ही इस भारी ज़िम्मेदारी को उठा लिया और किसी साथी की माँग नहीं की।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 15, पृष्ठ 138–139, संस्करण 2023)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ि.) आगे फ़रमाते हैं:

"आपकी विनम्रता का एक और उदाहरण यह है कि एक दिन एक अंसारी बीमार हो गए। आप उनकी कुशल-क्षेम पूछने के लिए उनके घर गए।

वापसी के समय उस अंसारी ने आपको सवारी के लिए एक घोड़ा दिया और अपने बेटे से कहा:

'तुम भी रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चले जाओ। हो सकता है कि रास्ते में उन्हें कोई और साथी न मिले। और लौटते समय घोड़ा वापस ले आना।'

कुछ देर बाद उनका बेटा अकेला वापस आ गया।

पिता ने पूछा:

'मैंने तो तुम्हें रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ भेजा था, ताकि रास्ते में सुरक्षा भी रहे और घोड़ा भी न बिदके। तुम वापस क्यों आ गए?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं मजबूर था। जब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर निकले तो उन्होंने मुझसे फ़रमाया: "तुम भी मेरे पीछे घोड़े पर बैठ जाओ।"

मैंने कहा: "या रसूलल्लाह! मुझसे इतनी बड़ी बेअदबी नहीं हो सकती।"

आपने फ़रमाया: "तो मुझसे भी यह बर्दाश्त नहीं हो सकता कि तुम पैदल चलो और मैं घोड़े पर सवार रहूँ। या तो तुम भी मेरे साथ घोड़े पर बैठो, या फिर वापस चले जाओ।"

इसलिए मैं वापस आ गया।"

उसने यही उचित समझा और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अकेले ही घोड़े पर चले गए।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 15, पृष्ठ 157, संस्करण 2023)

एक रिवायत है। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक चटाई पर सोए थे। जब आप उठे तो उस चटाई का निशान आपके पहलू पर पड़ गया था।

हमने अर्ज़ किया:

"या रसूलल्लाह! यदि आप अनुमति दें तो हम आपके लिए एक नरम बिस्तर तैयार कर दें।"

आपने फ़रमाया:

"मुझे दुनिया से क्या लेना-देना? मेरी मिसाल तो केवल उस यात्री जैसी है जो किसी पेड़ की छाया में थोड़ी देर ठहरता है, फिर आगे बढ़ जाता है और उस जगह को छोड़ देता है।"

(जामे तिर्मिज़ी, किताबुज़-ज़ुहद, हदीस संख्या 2377)

सहीह बुख़ारी में हज़रत उमर (रज़ि.) की एक रिवायत है। वे फ़रमाते हैं:

"एक बार मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। आप अपने ऊपर वाले कमरे में थे। उस समय आप एक चटाई पर लेटे हुए थे। आपके और चटाई के बीच कोई बिछौना नहीं था।

आपके सिर के नीचे चमड़े का एक तकिया था, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। आपके पैरों के पास बबूल के पत्तों का एक ढेर रखा था और सिर के पास कच्ची खालें टंगी हुई थीं।

मैंने देखा कि चटाई का निशान आपके पहलू पर पड़ गया था। यह देखकर मेरी आँखों से आँसू निकल आए।

आपने पूछा:

"तुम क्यों रो रहे हो?"

मैंने अर्ज़ किया:

"या रसूलल्लाह! किसरा और क़ैसर तो बड़ी आरामदायक ज़िंदगी जी रहे हैं, जबकि आप अल्लाह के रसूल होकर भी इस अवस्था में हैं।"

आपने फ़रमाया:

"क्या तुम इस बात से संतुष्ट नहीं कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत?"

(सहीह बुख़ारी, किताब तफ़्सीरुल-कुरआन, बाब:تبتغی مرضاۃ ازواجك, हदीस संख्या 4913, अनूदित संस्करण, जिल्द 12, पृष्ठ 264 एवं 267, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) इस घटना का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:

"आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांसारिक जीवन के प्रति विरक्ति का यह हाल था कि एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) आपसे मिलने गए। उन्होंने पहले एक लड़के के माध्यम से अंदर आने की अनुमति माँगी। उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खजूर की पत्तियों से बनी एक चटाई पर लेटे हुए थे।

जब हज़रत उमर (रज़ि.) अंदर आए तो आप उठकर बैठ गए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने देखा कि कमरा बिल्कुल खाली था। उसमें सजावट का कोई सामान नहीं

था। एक खूंटी पर तलवार लटक रही थी और वही चटाई थी, जिस पर आप लेटे हुए थे। उस चटाई के निशान आपकी मुबारक पीठ पर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

यह देखकर हज़रत उमर (रज़ि.) रो पड़े।

आपने फ़रमाया:

"ऐ उमर! तुम्हें किस बात ने रुला दिया?"

हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया:

"किसरा और क़ैसर तो ऐशो-आराम के साधनों में रहते हैं, जबकि आप, जो अल्लाह के रसूल और दोनों जहानों के बादशाह हैं, इस अवस्था में रह रहे हैं।"

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"ऐ उमर! मुझे दुनिया से क्या लेना-देना? मेरी मिसाल तो उस मुसाफ़िर की तरह है, जो ऊँट पर सवार होकर अपनी मंज़िल की ओर जा रहा हो। रास्ता रेगिस्तान का हो और तेज़ गर्मी के कारण उसे कोई पेड़ दिखाई दे, तो वह उसकी छाया में थोड़ी देर आराम कर ले। जैसे ही उसका पसीना सूख जाए, वह फिर अपनी यात्रा पर चल पड़े और उस स्थान को छोड़ दे।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 228–229, संस्करण 2022)

बुरे स्वभाव वाले लोगों के साथ भी आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमेशा नरमी, विनम्रता और श्रेष्ठ आचरण का व्यवहार करते थे।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अपना क़र्ज़ माँगने आया और उसने कठोर भाषा का प्रयोग किया।

सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) को इस पर क्रोध आया, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"उसे छोड़ दो, क्योंकि जिसका हक़ होता है, उसे अपनी बात कहने का अधिकार होता है। उसका हक़ तो मुझे हर हाल में देना ही है।"

फिर आपने फ़रमाया:

"उसके लिए एक ऊँट खरीदकर दे दो।"

सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया:

"हमें उसके बराबर का ऊँट नहीं मिला। उससे बेहतर और अधिक क़ीमत वाले ऊँट मिल रहे हैं।"

आपने फ़रमाया:

"वही खरीदकर उसे दे दो, क्योंकि तुममें सबसे अच्छा वह है जो क़र्ज़ चुकाने में सबसे अच्छा व्यवहार करता है।"

(मिश्कातुल-मसाबीह, किताबुल-बुयू', बाबुल-इफ़्लास वल-इंज़ार, प्रथम भाग, रिवायत संख्या 2906, जिल्द 1, पृष्ठ 537, मक्तबा दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

आज भी जो बहुत से झगड़े होते हैं, उनमें लोग मूल क़र्ज़ तक लौटाने को तैयार नहीं होते और उल्टा उसी में भी कमी कराने के लिए झगड़ा करते हैं। यदि हम इन शिक्षाओं को समझ लें, तो हमारे बहुत से विवाद अपने-आप समाप्त हो जाएँ।

इसी प्रकार आपकी विनम्रता का एक और उदाहरण मिलता है।

फ़त्ह-ए-मक्का (मक्का विजय) के समय, जब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद-ए-हराम में प्रवेश किए, तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) अपने पिता को साथ लेकर रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए।

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखा, तो फ़रमाया:

"ऐ अबू बक्र! तुम इस वृद्ध व्यक्ति को घर पर ही रहने देते। मैं स्वयं उनके पास आ जाता।"

इस पर हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया:

"या रसूलल्लाह! ये इस बात के अधिक अधिकारी हैं कि आपकी सेवा में स्वयं उपस्थित हों, न कि आप इनके पास तशरीफ़ लाएँ।"

फिर हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) ने अपने पिता को रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बैठाया।

आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके सीने पर हाथ फेरा और फ़रमाया:

"इस्लाम स्वीकार कर लीजिए, आपको शांति और सुरक्षा प्राप्त होगी।"

इसलिए अबू क़हाफ़ा ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(अल-इसाबह फ़ी तम्यीज़िस-सहाबह, जिल्द 4, पृष्ठ 375, मक्तबा दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 1995)

इसी प्रकार घर में अत्यंत सादा जीवन बिताने के संबंध में हज़रत हसन (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े सबके लिए खुले रहते थे।

न आपके लिए कोई दरबान खड़ा रहता था और न ही सुबह-शाम बड़े-बड़े बर्तनों में विशेष प्रकार के भोजन प्रस्तुत किए जाते थे।

अर्थात आपके लिए किसी प्रकार के विलासपूर्ण भोजन की व्यवस्था नहीं होती थी।

जो भी व्यक्ति आपसे मिलना चाहता, वह आसानी से आपसे मिल सकता था।

आप ज़मीन पर बैठते थे और अपना भोजन भी ज़मीन पर रखकर खाते थे।

आप साधारण और मोटे कपड़े पहनते थे।

आप गधे पर सवारी करते थे और अपने पीछे दूसरे व्यक्ति को भी बैठा लेते थे।

और भोजन के बाद अपनी उँगलियाँ चाट लिया करते थे, अर्थात उन्हें अच्छी तरह साफ़ कर लेते थे।

(अस-सुननुल-कुबरा लिल-बैहक़ी, जिल्द 10, पृष्ठ 171, हदीस संख्या 20838, मक्तबतुर-रुश्द)

उँगलियाँ चाटने के बारे में सहीह बुख़ारी में भी एक हदीस है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"भोजन के बाद हाथ धोने से पहले अपनी उँगलियाँ चाट लेनी चाहिए।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुल-अत्इमह, बाब: लअक़्क़ुल-असाबिअ व मस्सुहा..., हदीस संख्या 5456)

उँगलियाँ चाटने के संबंध में सहीह बुख़ारी की व्याख्या में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहिब (रज़ि.) ने एक टिप्पणी लिखी है। वे लिखते हैं:

"हज़रत सैयद (डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ि.) फ़रमाते हैं:

'यह बात सभी हकीमों के अनुभव में आ चुकी है और सभी चिकित्सकों का इस पर मतैक्य है कि मनुष्य की हाथ की उँगलियों में स्पर्श की एक विशेष शक्ति होती है। उदाहरण के लिए, यदि हम किसी कपड़े की कोमलता को परखना चाहें, तो हाथ की उँगलियों के अलावा किसी अन्य अंग से उसका सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता। यद्यपि पूरे शरीर में स्पर्श की शक्ति होती है, लेकिन यदि हाथ के स्थान पर पैर से किसी वस्तु की कोमलता का अनुमान लगाना चाहें, तो हम पूरी तरह सफल नहीं हो सकते।'

'हाथों, विशेष रूप से उँगलियों में एक विशेष विद्युत प्रभाव होता है। हाथ की उँगलियों का आँख से, जो ध्यान केंद्रित करने का प्रमुख साधन है, विशेष संबंध है। इसी कारण ध्यान या सम्मोहन करने वाले लोग भी अपने सामने बैठे व्यक्ति की उँगलियों की ओर अधिक ध्यान से देखते हैं और उनके माध्यम से अपनी आँखों के प्रभाव (मैस्मेरिज़्म) को उस व्यक्ति तक अधिक प्रभावशाली ढंग से पहुँचा सकते हैं और अपने उद्देश्य में सफल होते हैं।'

'इसी प्रकार जो औषधियाँ हाथ से तैयार की जाती हैं, वे उन दवाओं की अपेक्षा अधिक लाभदायक होती हैं जो मशीनों से बनाई जाती हैं।'

आज के समय में तो अधिकांश वस्तुएँ मशीनों से बनती हैं, लेकिन उस समय चिकित्सक और हकीम यही कहा करते थे। डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब (रज़ि.) स्वयं अत्यंत शिक्षित सर्जन और चिकित्सक थे। उन्होंने आगे लिखा:

'इसी सिद्धांत के अनुसार, जब मनुष्य हाथ की उँगलियों से भोजन का निवाला उठाता है, तो हर बार निवाला उठाते समय उसकी आँखें उँगलियों के सिरों पर पड़ती हैं। यदि भोजन समाप्त करने के बाद हाथ धोने या कपड़े से पोंछने से पहले वह अपनी उँगलियाँ चाट ले, तो उँगलियों पर लगी हुई चिकनाई के माध्यम से वह विशेष प्रभाव पेट तक पहुँचता है और पाचन-क्रिया को शक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार भोजन शीघ्र पच जाता है।'

यह उस समय के डॉक्टरों और हकीमों की राय थी। आज के चिकित्सकों का इस विषय में क्या मत है, यह अलग बात है। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही फ़रमाया कि भोजन के बाद हाथ पर जो भोजन लगा रह जाता है, उसे चाट लेने में लाभ ही है।

सहीह बुख़ारी की रिवायत में है:

"فَلَا يَمْسَحْ يَدَهُ حَتَّى يَلْعَقَهَا أَوْ يُلْعِقَهَا" अर्थात "वह अपना हाथ न पोंछे, जब तक कि अपनी उँगलियाँ स्वयं चाट न ले या उन्हें चटा न दे।"

इस हदीस की व्याख्या करने वालों ने "किसी से चटाने" के बारे में लिखा है कि इसका अर्थ यह है कि वह अपने नौकर, अपने बेटे या ऐसे व्यक्ति से चटवाए जिसे उँगलियाँ चाटने से घृणा न आती हो।

लेकिन जब स्वयं खाने वाला अपनी उँगलियाँ ख़ुद चाट सकता है, तो किसी और से चटवाने की क्या आवश्यकता है? कई बार व्याख्या लिखने वाले मूल बात से बहुत दूर निकल जाते हैं। बहरहाल, "यह बात उचित नहीं लगती और न ही मानवीय गरिमा के अनुकूल है कि किसी दूसरे से कहा जाए कि वह मेरी उँगलियाँ चाटे।"

इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि मनुष्य भोजन करने के बाद अपनी उँगलियाँ स्वयं चाटकर साफ़ करे और अपने आश्रित तथा अपने संरक्षण में रहने वाले लोगों को भी यह शिक्षा दे कि वे भी अपनी-अपनी उँगलियाँ चाटकर साफ़ करें, ताकि वे उन चिकित्सीय लाभों और अन्य उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस शिक्षा में छिपे हुए हैं।

(सहीह बुख़ारी, अनूदित संस्करण, जिल्द 13, पृष्ठ 398–400, किताबुल-अत्इमह, बाब: लअक़ुल-असाबिअ व मस्सुहा..., इस्लाम इंटरनेशनल पब्लिकेशन्स लिमिटेड)

मस्जिद की सफ़ाई, झाड़ू-पोंछा और सफ़ाई का काम करना भी आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी अपनी शान के ख़िलाफ़ नहीं समझा।

इसलिए हज़रत याक़ूब बिन ज़ैद (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में आने वाली धूल को एक छड़ी से साफ़ किया करते थे।

इससे यही समझा जा सकता है कि छड़ी के आगे कोई कपड़ा आदि लगाकर उससे सफ़ाई करते थे।

(अल-मुसन्नफ़ लि-इब्न अबी शैबा, जिल्द 2, पृष्ठ 321, हदीस संख्या 4044, अल-फ़ारूक़ अल-हदीसिय्या लित्तिबाअह वन-नश्र, 2008)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे। आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आसमान की ओर देखा तो एक फ़रिश्ता उतरता हुआ दिखाई दिया।

हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने कहा:

"यह वह फ़रिश्ता है जो अपनी सृष्टि के दिन से लेकर इस समय तक कभी भी धरती पर नहीं उतरा।"

जब वह फ़रिश्ता उतरा तो उसने कहा:

"ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपके रब ने मुझे आपके पास भेजा है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या वह आपको बादशाह नबी बनाए या बंदा रसूल?"

हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने कहा:

"ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अपने रब के सामने विनम्रता अपनाइए।"

तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"बल्कि मुझे बंदा रसूल बनाकर भेजा जाए।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 3, पृष्ठ 13, मुस्नद अबू हुरैरा (रज़ि.), हदीस संख्या 7160, आलमुल-कुतुब, 1998)

यह तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वभाव ही था। यदि हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) यह बात न भी कहते, तब भी आप यही उत्तर देते। आपने हमेशा यही शिक्षा दी और अपने अनुयायियों को भी यही बताया कि मैं तो एक इंसान और अल्लाह का रसूल हूँ।

बहरहाल, इस रिवायत का अर्थ यही है कि यदि ऐसा अवसर आता तो आप अत्यंत विनम्रता से यही कहते कि मैं बादशाह रसूल नहीं बनना चाहता। मैं तो अल्लाह का विनम्र बंदा और उसका रसूल बनना चाहता हूँ। और हमारे कलिमा में भी इसी बात का उल्लेख है।

एक सच्चे मुसलमान को किस प्रकार विनम्र होना चाहिए, इस बारे में एक रिवायत में हज़रत इयाज़ बिन हिमार (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"निश्चित रूप से अल्लाह तआला ने मेरी ओर वह्य की है कि तुम सब विनम्रता अपनाओ, यहाँ तक कि कोई किसी पर अत्याचार न करे और कोई किसी पर घमंड न करे।"

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-अदब, बाब: फ़ित्तवाज़ो, हदीस संख्या 4895)

आपके सच्चे सेवक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) हमें नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:

"मनुष्य को विनम्रता अपनानी चाहिए। विनम्रता सीखना कोई कठिन बात नहीं है। सीखना ही क्या है? मनुष्य तो स्वयं ही विनम्र है और उसी के लिए पैदा किया गया है। 'مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ' अर्थात 'मैंने जिन्न और इंसानों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।'

घमंड आदि सब बनावटी चीज़ें हैं। यदि मनुष्य इस बनावट को उतार दे, तो उसकी प्रकृति में केवल विनम्रता ही दिखाई देगी।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 38, संस्करण 2022)

हमें नसीहत करते हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विनम्रता के उच्च स्थान का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला अत्यंत दयालु और कृपालु है। वह हर प्रकार से मनुष्य का पालन-पोषण करता है और उस पर दया करता है। इसी दया के कारण वह अपने नियुक्त किए हुए लोगों और रसूलों को भेजता है, ताकि वे संसार के लोगों को पापमय जीवन से छुटकारा दिलाएँ।

लेकिन घमंड बहुत ही ख़तरनाक बीमारी है। जिस मनुष्य में यह पैदा हो जाए, उसके लिए यह आध्यात्मिक मृत्यु है। मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि यह बीमारी हत्या से भी बढ़कर है। घमंडी व्यक्ति शैतान का भाई बन जाता है, क्योंकि घमंड ही वह कारण था जिसने शैतान को अपमानित और धिक्कारा हुआ बना दिया।

इसलिए एक मोमिन की यह शर्त है कि उसमें घमंड न हो, बल्कि विनम्रता, नम्रता और दीनता हो। यही अल्लाह के नियुक्त लोगों की विशेषता होती है। उनमें अत्यधिक विनम्रता और नम्रता होती है और इन सबमें सबसे बढ़कर यह गुण आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में था।

आपके एक सेवक से पूछा गया कि आपके साथ आप मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का व्यवहार कैसा है? उसने उत्तर दिया: 'सच तो यह है कि वह मेरी अपेक्षा मेरी अधिक सेवा करते हैं।'

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ۔

यही उच्च नैतिकता और विनम्रता का सर्वोत्तम उदाहरण है। यह भी सत्य है कि अधिकतर सेवक अपने मालिकों और रिश्तेदारों के सबसे अधिक निकट रहते हैं और हर समय उनके आसपास मौजूद रहते हैं। इसलिए यदि किसी के धैर्य, सहनशीलता, विनम्रता और नम्रता का वास्तविक नमूना देखना हो, तो उसके सेवकों से पूछा जा सकता है।

कुछ पुरुष और स्त्रियाँ ऐसे होते हैं कि यदि नौकर से ज़रा-सी भी गलती हो जाए, जैसे चाय ठीक न बने, तो तुरंत गालियाँ देना शुरू कर देते हैं या कोड़ा उठाकर मारने लगते हैं। यदि शोरबे में थोड़ा नमक अधिक हो जाए, तो बेचारे नौकरों पर मुसीबत टूट पड़ती है।

गरीब लोगों से तो उनका व्यवहार तभी होता है, जब वे भूखे होते हैं और सूखी रोटी पर गुज़ारा कर रहे होते हैं। फिर भी, यह जानते हुए भी उनकी कोई परवाह नहीं करते। जब वे याचक बनकर आते हैं, तब वास्तव में उनका इम्तिहान लिया जा रहा होता है।

अल्लाह तआला तो कण-कण का सृष्टिकर्ता है। उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। गरीबों के साथ व्यवहार करके ही पता चलता है कि किसी मनुष्य में अल्लाह का कितना डर है या नहीं है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 312–313, संस्करण 2022)

अल्लाह का भय कितना है, यह गरीबों के साथ व्यवहार से पता चलता है। अमीरों के साथ अच्छा व्यवहार करने से इसका पता नहीं चलता।

अल्लाह तआला हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा और आपकी सुन्नत पर चलते हुए विनम्रता का मार्ग अपनाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

नमाज़ के बाद मैं एक ग़ायब जनाज़ा भी पढ़ाऊँगा। यह जनाज़ा मकर्रम मलिक दाऊद महमूद साहिब, पुत्र मुहम्मद इस्हाक़ साहिब, निवासी वहाड़ी (वर्तमान कराची) का है।

कुछ दिन पहले उनका इंतिकाल हो गया था।

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ۔

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वे मूसी थे।

उनके दादा मुहम्मद दीन साहिब गाँव बढ़ताँ वाला, ज़िला सियालकोट के रहने वाले थे। उन्होंने 1914 में हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी (रज़ि.) के हाथ पर बैअत की थी।

मलिक दाऊद साहिब को स्थानीय स्तर पर सद्र जमाअत, सेक्रेटरी माल तथा

अंसारुल्लाह में भी सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली।

उनके परिवार में तीन बेटियाँ और चार बेटे हैं। उनके एक बेटे मुहम्मद अकमल साहिब वक्फ़-ए-ज़िंदगी के रूप में मुर्ब्बी सिलसिला हैं। वे इस समय गाम्बिया में सेवा कर रहे हैं। सेवा क्षेत्र में होने के कारण वे अपने पिता के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके।

यही बेटे, अकमल साहिब मुर्ब्बी, लिखते हैं कि:

"मेरे वालिद साहिब बहुत ख़ुशमिज़ाज, हँसमुख और ज़िंदादिल इंसान थे। उन्हें तबलीग़ का बहुत शौक था। जब भी वे अपनी ज़मीनों पर सिंध जाते, वहाँ भी तबलीग़ करने के बहाने खोजते रहते और लोगों को तबलीग़ करते। जब तक पाकिस्तान में सख़्ती वाला क़ानून लागू नहीं हुआ था, तब तक वे अपने साथ तबलीगी पर्चे भी रखते थे और लगातार तबलीग़ किया करते थे। इसी कारण बहुत से लोग उनके प्रभाव में भी आए।

वे बहुत मेहमाननवाज़ थे। चाहे कोई केंद्रीय मेहमान हो या कोई सामान्य मेहमान, सभी की बहुत अच्छी मेहमाननवाज़ी करते थे।

जब तक नमाज़ सेंटर नहीं बन गया था, उन्होंने अपने घर को ही नमाज़ सेंटर बना रखा था, जहाँ नियमित रूप से जमाअत के साथ नमाज़ अदा की जाती थी। फ़ज्र की नमाज़ के बाद वे बहुत ऊँची आवाज़ में क़ुरआन करीम की तिलावत भी किया करते थे।

उनके उसी सेंटर में दूसरी जमाअतों के लोग भी जुमे की नमाज़ पढ़ने आया करते थे।

जब वे अपने खेतों में जाते तो कहा करते थे कि मैं अपने खेत के हर कोने में जाकर नफ़्ल नमाज़ पढ़ता हूँ और इसी कारण अल्लाह तआला मेरी फ़सल में बरकत देता है तथा मेरी फ़सल दूसरों की तुलना में दोगुनी हो जाती है।

इसी प्रकार उन्होंने अपने गाँव में जो घर बनाया था, उसके बारे में अपने बच्चों से कहा कि मैं चाहता हूँ कि यह पूरा घर हमेशा के लिए जमाअत को दे दूँ, ताकि यह जमाअत का सेंटर बन जाए। बाद में उन्होंने वास्तव में वह घर जमाअत को दे भी दिया।

बहरहाल, मेहमाननवाज़ी उनका बहुत प्रमुख गुण था। लोगों की सेवा करना, जमाअत की पूरी आज्ञाकारिता करना और नियमित रूप से ख़ुत्बे सुनना उनकी विशेष आदतों में शामिल था।"

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार फ़रमाए।

(प्रकाशित: अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 12 जून 2026, पृष्ठ 2 से 8)

पृष्ठ 15 का शेष

अथाह सागर था।

इसलिए आप उन्हें संबोधित करके लिखते हैं:

"आपका पत्र प्राप्त हुआ। यद्यपि अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है कि यह विनीत व्यक्ति उसकी ओर से नियुक्त है और ऐसे मामलों में, जहाँ आम लोगों के भटकने का डर हो, जब तक मुझे पूरी तरह निश्चित और स्पष्ट रूप से कोई बात प्रकट नहीं की जाती, मैं उसे कभी अपनी ज़बान पर नहीं लाता। लेकिन इस विषय में अवश्य अल्लाह तआला की कोई हिकमत होगी कि मसीह के अवतरण के इस मसले में, जिसका इस्लाम की मूल शिक्षा और वास्तविक सार से कोई संबंध नहीं, और जिसकी वास्तविकता एक मुसलमान पर प्रकट की गई है, जिस पर भाईचारे के नाते अच्छा विचार रखना चाहिए था, आप जैसे आदरणीय व्यक्ति को विरोध में लिखने का उत्साह दिया गया।" पहले तो यह था कि यदि मैंने कहा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का देहांत हो चुका है, तो एक मुसलमान होने के नाते आपको मेरी पुष्टि करनी चाहिए थी, लेकिन आपने विरोध शुरू कर दिया। आगे लिखते हैं: "मैं जानता हूँ कि इस काम में आपकी नीयत नेक होगी। यदि मुझे आपके जल्दबाज़ी करने की शिकायत भी हो" अर्थात जो जल्दबाज़ी आप दिखा रहे हैं और जो शब्द आपने जल्दी में लिखे हैं, "और मैं उसे सामने या आपकी अनुपस्थिति में बयान भी करूँ, फिर भी मुझे आपकी नीयत पर अच्छा विश्वास है। मैं आपको आज के अधिकतर उलेमा से, बल्कि यदि आप बुरा न मानें तो कुछ दीनी सेवाओं के लिहाज़ से मौलवी नज़ीर हुसैन साहब से भी बेहतर समझता हूँ। यदि मैं आपसे इन बातों की शिकायत करूँ, तब भी आपकी साफ़ नीयत के कारण मुझे आपसे प्रेम है। यदि मुझे लोग पहचानें या न पहचानें, मैं समझूँगा कि मेरे लिए यही अल्लाह की इच्छा थी। मुझे जीत और हार से कोई मतलब नहीं, बल्कि मेरा उद्देश्य केवल अल्लाह के आदेश का पालन करना है।"

मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि मैं जीतता हूँ या हारता हूँ। अल्लाह तआला ने मुझे जो आदेश दिया है, मैं उसी की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ और उसी के अनुसार मैंने यह दावा किया है।

"मैं जानता हूँ कि इस विरोध में भी आपकी नीयत भलाई की होगी। लेकिन मेरी राय में बेहतर यह है कि आप पहले मुझसे बातचीत करें और मेरी पुस्तकें अर्थात यह तीनों पुस्तकें—फ़त्ह-ए-इस्लाम, तौज़ीहुल-मराम और इज़ालह-ए-औहाम—देख लेने के बाद कुछ लिखें। मुझे इस बात का कोई दुख या रंज नहीं कि आप जैसे मित्र भी विरोध पर तैयार हो जाएँ, क्योंकि यह विरोध भी संभवतः सत्य की खोज के लिए ही होगा..." लेकिन पहले मेरी पुस्तकें तो पढ़ लीजिए।

"अब मेरी तबीयत इतनी ठीक है कि मैं आपसे मिलने आ सकता हूँ। यदि आप बटाला आ जाएँ, तो यद्यपि मैं बीमार हूँ और चक्कर तथा सिरदर्द इतना अधिक है कि नमाज़ भी खड़े होकर नहीं पढ़ सकता, फिर भी गिरते-पड़ते आपके पास पहुँच सकता हूँ।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 311-312, पत्र संख्या 6)

अर्थात मुझे सिरदर्द और चक्कर की तकलीफ़ है, लेकिन इतनी शक्ति अवश्य है कि मैं यात्रा करके आपसे मिलने आ सकता हूँ।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहब के नाम एक दूसरे पत्र में लिखते हैं:

"यदि आप बुरा न मानें तो इस विनीत व्यक्ति की राय में आपने मेरे भाई मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब के उत्तर में कुछ कठोर भाषा का प्रयोग किया है।" हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो पत्र आपको लिखा था, उसके उत्तर में आपने बहुत कठोर शब्द लिखे हैं।

"अल्लाह तआला हमेशा विनम्रता और नम्रता को पसंद करता है, और विद्वानों का अपने भाइयों के साथ व्यवहार सबसे उत्तम होना चाहिए। जिस धर्म की सहायता और हमदर्दी के लिए दिन-रात प्रयास किए जा रहे हैं, उसका उद्देश्य क्या है? केवल यही कि हमारे सभी हालात, कर्म, चलना-फिरना और जीवन का हर कार्य अल्लाह और उसके रसूल की इच्छा के अनुसार हो जाए।

मेरे विचार में अच्छे चरित्र के सभी गुणों में से जितना अल्लाह तआला विनम्रता, नम्रता, झुकाव और हर उस प्रकार की नम्रता को पसंद करता है जो घमंड के विपरीत हो, उतना किसी और गुण को पसंद नहीं करता।

मुझे याद है कि एक बार इस विनीत व्यक्ति की एक अत्यन्त अधार्मिक हिंदू से बातचीत हुई। उसने सच्चे धर्म का अपमान करने के लिए बहुत कठोर शब्द कहे। दीन की रक्षा के उत्साह में मैंने कुछ कठोरता दिखाई और وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ (उन पर कठोरता करो) पर कुछ अमल किया। लेकिन क्योंकि वह कठोरता एक व्यक्ति को लक्ष्य बनाकर की गई थी, इसलिए मुझे इल्हाम हुआ कि 'तेरी बात में कठोरता बहुत है। रिफ़्क (नर्मी) चाहिए, रिफ़्क।' अर्थात मैंने उत्तर तो दिया था, लेकिन उस पर भी अल्लाह तआला ने मुझे नर्मी अपनाने की शिक्षा दी।

"यदि हम न्याय की दृष्टि से देखें तो हम क्या हैं और हमारा ज्ञान क्या है? यदि समुद्र में एक छोटी चिड़िया अपनी चोंच मारे, तो उससे समुद्र का क्या घट जाएगा?" अर्थात यदि चिड़िया समुद्र से थोड़ा पानी पी ले, तो समुद्र में क्या कमी आ जाएगी?

"हमारे लिए भी यही बेहतर है कि जैसे हम वास्तव में विनम्र हैं, वैसे ही विनम्र बने रहें। जब हमारा पालनहार हममें घमंड और अभिमान को पसंद नहीं करता, तो हम क्यों करें? हमारे लिए ऐसी इज़्ज़त से अपमान अच्छा है, जिसके कारण हम अल्लाह के क्रोध के पात्र बन जाएँ।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 315-316, पत्र संख्या 8)

अर्थात अल्लाह तआला को नाराज़ करने से बेहतर है कि लोग हमारा अपमान ही क्यों न करें।

अतः आपका प्रत्येक कथन और प्रत्येक कार्य विनम्रता का जीवंत उदाहरण था। आपके जीवन का केवल एक ही उद्देश्य था कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त हो, उसका संदेश पूरी दुनिया तक पहुँचे और उसकी एकता स्थापित हो।

आपने हमें भी बार-बार यही नसीहत की कि विनम्रता अपनाओ। इसी में तुम्हारी भलाई है और यही गुण तुम्हें अल्लाह तआला का निकट बना देगा।

अल्लाह तआला हमें भी विनम्रता के मार्ग पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

"जो व्यक्ति नम्रता के साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता (रज़ा) चाहता है, अल्लाह उससे प्रसन्न हो जाता है।" (हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आप अलैहिस्सलाम की नम्रता के उच्च स्तर को देखकर स्वयं अल्लाह तआला ने भी इल्हाम के माध्यम से इसकी पुष्टि की।

18 मार्च 1907 को आपको यह इल्हाम हुआ:

"तेरे नम्रता भरे रास्ते उसे पसंद आए।"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 मई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अपने आका व मुताअ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षा और सुन्नत के अनुसार।

आज मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक (ग़ुलाम-ए-सादिक़) की विनम्रता और नम्र स्वभाव की कुछ घटनाओं का उल्लेख करूँगा तथा इस संबंध में भी कि आपने अपनी जमाअत को विनम्रता और नम्रता अपनाने की कैसी शिक्षा दी। आपकी विनम्रता का स्तर इतना ऊँचा था कि स्वयं अल्लाह तआला ने भी वह्य (अल्लाह तआला के प्रकाशना) के माध्यम से उसकी पुष्टि की। 18 मार्च 1907 को आपको यह इल्हाम हुआ:

"तेरे विनम्रता भरे रास्ते उसे पसंद आए।"

(तज़किरा, पृष्ठ 675, संस्करण 2023)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"इस विनम्र सेवक पर प्रकट किया गया है कि यह विनीत व्यक्ति अपनी गरीबी, नम्रता, अल्लाह पर भरोसे (तवक्कुल), त्याग (ईसार), दिव्य निशानियों और अल्लाह तआला के प्रकाशों के आधार पर मसीह की पहली ज़िंदगी का नमूना है। इस विनम्र सेवक का स्वभाव और मसीह का स्वभाव आपस में बहुत अधिक समान हैं। मानो एक ही तत्व के दो टुकड़े हों या एक ही वृक्ष के दो फल हों, और दोनों में अत्यंत गहरा एकत्व है। अर्थात दोनों में ऐसा मेल है कि आध्यात्मिक दृष्टि से उनमें केवल बहुत सूक्ष्म अंतर है। बाहरी रूप से भी एक समानता है, और वह यह कि मसीह एक महान और पूर्ण नबी अर्थात मूसा के अनुयायी और दीन के सेवक थे तथा उनकी इंजील, तौरात की शाखा थी। इसी प्रकार यह विनम्र सेवक भी उस महान नबी के सबसे छोटे सेवकों में से है, जो सभी रसूलों के सरदार और सबसे श्रेष्ठ रसूल हैं।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग चतुर्थ, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 1, पृष्ठ 593-594, शेष हाशिया, हाशिया संख्या 3)

एक बार "एक व्यक्ति ने हज़रत की सेवा में निवेदन किया कि हुज़ूर ने हक़ीक़तुल-वही लिखने में..." और यह पुस्तक जीवन के अंतिम समय में लिखी गई थी। "...और उसके प्रूफ बार-बार पढ़ने में बहुत परिश्रम किया है। इसी कारण बार-बार हुज़ूर का स्वास्थ्य ख़राब हो जाता है। अब हुज़ूर कुछ दिन पूर्ण विश्राम करें और पढ़ने-लिखने का काम बिल्कुल छोड़ दें।"

इस पर हज़रत ने उत्तर दिया:

"हमारी मेहनत ही क्या है? हमें तो उस समय शर्म आती है जब हम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की मेहनतों की ओर देखते हैं कि किस प्रकार उन्होंने खुशी-खुशी अल्लाह की राह में अपने सिर तक कटवा दिए।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 182, संस्करण 2022)

एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं:

"कम समझ वाले लोग आपत्ति करते हैं कि मैं अपने दर्जे को आवश्यकता से अधिक बढ़ाता हूँ।"

अर्थात लोग कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपना दर्जा बहुत बढ़ा रहे हैं।

फ़रमाया:

"मैं अल्लाह तआला की कसम खाकर कहता हूँ कि मेरे स्वभाव और प्रकृति में यह बात है ही नहीं कि मैं अपनी प्रशंसा का इच्छुक हूँ या अपनी महानता के प्रदर्शन से प्रसन्न होता हूँ। मैं तो हमेशा नम्रता और गुमनामी का जीवन पसंद करता रहा हूँ। लेकिन यह मेरे अधिकार और शक्ति से बाहर था, क्योंकि स्वयं अल्लाह तआला ने मुझे लोगों के सामने प्रकट किया और जितनी मेरी प्रशंसा तथा महानता का उल्लेख उसने अपने उस पवित्र कलाम में किया जो मुझ पर उतारा गया,"

फिर आपने फ़रमाया:

"यह सारी प्रशंसा और महानता तो केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ही है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 114, संस्करण 2022)

आप नए मुसलमानों को भी इस्लाम की सादगी और विनम्रता की शिक्षा देते थे।

इसलिए लिखा है कि 22 अक्टूबर 1903 को हज़रत अक़्दस की सेवा में एक ऑस्ट्रेलियाई नव-मुस्लिम आए जिनका नाम मुहम्मद अब्दुल हक़ था। बातचीत के दौरान हज़रत अक़्दस ने उनसे फ़रमाया:

"हमारे सिद्धांतों में से एक यह भी है कि हम सादा जीवन बिताते हैं। आजकल यूरोप ने जिन दिखावों और बनावटी बातों को जीवन का आवश्यक हिस्सा बना लिया है, उनसे हमारी सभा बिल्कुल पवित्र है। हम केवल रस्मों और रिवाजों के बंधन में नहीं रहते।

हाँ, जहाँ किसी आदत को छोड़ने से किसी को कष्ट पहुँचने या किसी पाप का डर हो, वहाँ तक हम उसका ध्यान रखते हैं। लेकिन खाने-पीने और उठने-बैठने में हम सादा जीवन ही पसंद करते हैं।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 294 तथा 298-299, संस्करण 2022)

यह विनम्रता का वह उच्च स्तर है जिसे आप अपनी जमाअत के लोगों में भी पैदा करना चाहते थे। इसलिए एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं:

"मनुष्य को विनम्रता अपनानी चाहिए। विनम्रता सीखना कोई कठिन बात नहीं है। सीखना ही क्या है? मनुष्य तो स्वयं ही विनम्र है और उसी के लिए पैदा किया गया है।

'मा ख़लक़्तुल जिन्न वल इन्सा इल्ला लियाबुदून'

अर्थात 'मैंने जिन्नों और इंसानों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।'

घमंड आदि सारी बातें बनावटी हैं। यदि मनुष्य इस बनावट को उतार दे, तो उसके स्वभाव में केवल विनम्रता ही दिखाई देगी।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 38, संस्करण 2022)

अतः यही वह सिद्धांत है जिसके द्वारा अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त होती है।

विनम्रता अपनाने की शिक्षा देते हुए एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं:

"मुबारक हैं वे लोग जो अपने आपको सबसे अधिक तुच्छ और छोटा समझते हैं, जो लज्जा और विनम्रता के साथ बात करते हैं, जो गरीबों और जरूरतमंदों का सम्मान करते हैं, जो विनम्र लोगों के साथ आदर से पेश आते हैं, जो कभी शरारत और घमंड के कारण किसी का मज़ाक नहीं उड़ाते, जो अपने दयालु पालनहार को याद रखते हैं और धरती पर नम्रता के साथ चलते हैं।

मैं बार-बार कहता हूँ कि यही वे लोग हैं जिनके लिए मुक्ति तैयार की गई है। जो व्यक्ति इस दुनिया में ही शरारत, घमंड, आत्मप्रशंसा, अहंकार, दुनियादारी, लालच और बुराई की आग से बाहर नहीं निकला, वह अगले संसार में भी कभी उससे बाहर नहीं निकल सकेगा।"

अर्थात इस संसार में किए गए नेक कर्म ही अगले संसार में भी काम आएँगे।

फिर फ़रमाया:

"मैं क्या करूँ और कहाँ से ऐसे शब्द लाऊँ जो इस समूह के दिलों पर प्रभाव डालें?" अर्थात जो लोग मुझे मानते हैं।

"हे अल्लाह! मुझे ऐसे शब्द प्रदान कर और ऐसे भाषण इल्हाम कर जो इन दिलों पर अपना प्रकाश डालें और अपनी विशेष उपचारकारी शक्ति से इनके भीतर के

ज़हर को दूर कर दें। मेरी जान इस इच्छा से तड़प रही है कि वह दिन भी आए जब मैं अपनी जमाअत में बड़ी संख्या में ऐसे लोगों को देखूँ जिन्होंने वास्तव में झूठ छोड़ दिया हो और अपने अल्लाह से सच्चा वचन कर लिया हो कि वे हर प्रकार की बुराई से अपने आपको बचाएँगे और घमंड से, जो सभी बुराइयों की जड़ है, पूरी तरह दूर हो जाएँगे तथा अपने पालनहार से डरते रहेंगे।"

(शहादतुल-कुरआन, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 6, पृष्ठ 398)

कुछ लोगों को जलसा के दिनों में या जब कोई कार्यक्रम होता है, विशेष रूप से आगे की कुर्सियों पर बैठने की इच्छा होती है। आम तौर पर जलसों आदि में कभी-कभी ग्रीन एरिया या ऐसे स्थान होते हैं जहाँ आगे बैठकर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को निकट से सुनने की विशेष इच्छा की जाती है। यह बात अपनी जगह ठीक है, लेकिन कभी-कभी इसमें अहंकार भी शामिल हो जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे व्यवस्था संभालने वालों के लिए कठिनाइयाँ पैदा होती हैं।

ऐसी इच्छा रखने वालों को नसीहत करते हुए आप फ़रमाते हैं:

"मनुष्य को चाहिए कि जब वह कहीं जाए तो अपने लिए सबसे नीचे का स्थान चुने। यदि वह किसी बेहतर स्थान का अधिकारी होगा तो मेज़बान स्वयं उसे बुलाकर अच्छी जगह बैठाएगा और उसका सम्मान करेगा।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 93, संस्करण 2022)

यदि व्यवस्था की ओर से आगे बैठाया जाए तो ठीक है। एक व्यवस्था होती है जो कहती है कि आप आवेदन दे दें, हम उसे देखेंगे।

यदि व्यवस्था ने आवेदन पर विचार न किया हो या किसी मजबूरी के कारण उसे अस्वीकार कर दिया हो, तो फिर बिना किसी आपत्ति के और बिना मन में कोई शिकायत पैदा किए, उसके निर्णय को स्वीकार कर लेना चाहिए।

फिर...

अल्लाह तआला का प्रेम प्राप्त करने के लिए भी विनम्रता आवश्यक है।

इस बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"कोई व्यक्ति अल्लाह तआला का प्रेम और उसकी प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसके भीतर दो गुण पैदा न हो जाएँ। पहला यह कि वह अपने घमंड को तोड़ दे, जैसे कोई ऊँचा खड़ा पहाड़ गिरकर ज़मीन के बराबर हो जाता है। उसी प्रकार

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने मन से हर प्रकार के घमंड और बड़प्पन के विचार निकाल दे तथा विनम्रता और नम्रता को अपनाए।

दूसरी बात यह है कि उसके पहले के सभी गलत संबंध टूट जाएँ, जैसे पहाड़ गिरकर "मुतसद्दिअन" हो जाता है।" पवित्र क़ुरआन में "मुतसद्दिअन" शब्द आया है, अर्थात टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। ईंट से ईंट अलग हो जाती है। इसी प्रकार उसके वे पुराने संबंध भी टूट जाएँ जो गंदगी और अल्लाह की नाराज़गी का कारण थे।

अर्थ यह है कि तुम्हारे भीतर जो गलत संबंध थे, उन्हें तोड़ना है। जब वे पुराने संबंध, जिनसे बुराइयाँ पैदा होती थीं, समाप्त हो जाएँ—इसका यह अर्थ नहीं कि सारे रिश्ते ही तोड़ दिए जाएँ—तब मन में नेकी की ओर रुचि पैदा होगी। उसके बाद उसकी मुलाकातें, दोस्तियाँ, प्रेम और शत्रुता—सब केवल अल्लाह तआला के लिए रह जाएँ।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 171, संस्करण 2022)

अर्थात जो भी कार्य हो, वह केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हो।

एक स्थान पर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला के गुनाह से बचने के लिए यह आयत है:

'इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन'

अर्थात 'हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं और केवल तुझी से मदद चाहते हैं।'

जो लोग अपने पालनहार के सामने विनम्रता के साथ लगातार दुआ करते रहते हैं कि शायद उनकी कोई विनम्र प्रार्थना स्वीकार हो जाए, तो अल्लाह तआला स्वयं उनका सहायक बन जाता है।"

इसी संबंध में आप अलैहिस्सलाम एक घटना सुनाते हैं:

"एक बहुत बड़ा इबादत करने वाला व्यक्ति था, जो हमेशा यह दुआ करता रहता था कि, 'ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से छुटकारा दे।' बहुत दुआ करने के बाद उसने सोचा कि सबसे अधिक विनम्रता कैसे पैदा की जाए? क्या तरीका अपनाया जाए?

फिर उसने सोचा कि कुत्ते से अधिक विनम्र कोई नहीं होता। इसलिए उसने कुत्ते की तरह रोना शुरू कर दिया।

एक दूसरे व्यक्ति ने समझा कि मस्जिद में कोई कुत्ता आ गया है। उसने सोचा कि कहीं वह मेरे बर्तन को अपवित्र न कर दे। इसलिए वह देखने आया। उसने देखा कि वहाँ तो वही इबादत करने वाला व्यक्ति था, कोई कुत्ता नहीं था।

उसने पूछा, 'अभी यहाँ कुत्ता रो रहा था, वह कौन था?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं ही वह कुत्ता हूँ।'

फिर पूछा, 'तुम इस तरह क्यों रो रहे थे?'

उसने कहा, 'अल्लाह को विनम्रता पसंद है। इसलिए मैंने सोचा कि शायद इस तरह मेरी विनम्रता स्वीकार हो जाए।'"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 210, संस्करण 2022)

बहरहाल, यह उसकी अपनी सोच थी और उसने उसी के अनुसार कार्य किया। उसका उद्देश्य यह था कि मैं सबसे तुच्छ बन जाऊँ, ताकि किसी प्रकार अल्लाह तआला का निकटता प्राप्त कर सकूँ।

इसी संबंध में आप अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"मनुष्य, जो स्वयं एक विनम्र और कमजोर प्राणी है, अपने ही कर्मों के कारण अपने आपको बड़ा समझने लगता है।"

यही बुरे कर्मों का परिणाम है कि उसके भीतर घमंड पैदा हो जाता है।

"उसमें अहंकार और घमंड आ जाता है। जब तक मनुष्य अपने आपको सबसे छोटा नहीं समझेगा, तब तक वह अल्लाह के मार्ग में मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 138, संस्करण 2022)

अपनी बैअत में शामिल होने वालों को विनम्रता का सर्वोच्च स्तर प्राप्त करने की शिक्षा देते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"बैअत का वास्तविक अर्थ अपने आपको बेच देना है। इसकी बरकतें और प्रभाव उसी शर्त से जुड़े हुए हैं, जैसे एक बीज को ज़मीन में बोया जाता है।

बीज की पहली अवस्था यही होती है कि किसान उसे बो देता है और फिर यह पता नहीं होता कि उसका आगे क्या होगा। वह मिट्टी के भीतर गहराई में छिप जाता है। अब कोई नहीं जानता कि उसका क्या परिणाम होगा।

लेकिन यदि वह बीज अच्छा हो और उसके भीतर बढ़ने की शक्ति हो, तो अल्लाह के फ़ज़्ल और किसान की मेहनत से वह मिट्टी से बाहर निकलता है, अंकुरित होता है और एक दाने से हजारों दाने पैदा हो जाते हैं।

इसी प्रकार

बैअत करने वाले व्यक्ति को सबसे पहले विनम्रता और नम्रता अपनानी पड़ती है तथा अपने अहंकार और स्वार्थ को छोड़ना पड़ता है। तभी वह आध्यात्मिक उन्नति के योग्य बनता है। लेकिन जो व्यक्ति बैअत करने के साथ-साथ अपना अहंकार भी बनाए रखता है, उसे कभी भी आध्यात्मिक लाभ प्राप्त नहीं होता।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 306-307, संस्करण 2022)

विनम्रता के बिना तो बैअत का भी कोई लाभ नहीं।

आपने फ़रमाया:

"तुम जितनी अधिक नरमी अपनाओगे और जितनी अधिक विनम्रता तथा नम्रता दिखाओगे, अल्लाह तआला उतना ही तुमसे प्रसन्न होगा।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 66, संस्करण 2022)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"जो व्यक्ति विनम्रता के साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहता है, अल्लाह उससे प्रसन्न हो जाता है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 211, संस्करण 2022)

फिर विनम्रता के लाभ और घमंड के परिणाम को स्पष्ट करते हुए आप फ़रमाते हैं:

"सबसे पहले आदम ने भी गलती की थी और शैतान ने भी। लेकिन आदम में घमंड नहीं था। इसलिए उन्होंने अल्लाह तआला के सामने अपने गुनाह को स्वीकार किया और उनका गुनाह माफ़ कर दिया गया। इसी से मनुष्य के लिए यह आशा है कि तौबा करने पर उसके गुनाह भी माफ़ किए जा सकते हैं।"

अर्थात जब अल्लाह तआला ने आदम के गुनाह माफ़ कर दिए, तो यदि मनुष्य भी विनम्रता अपनाए और तौबा करे, तो उसे भी आशा रखनी चाहिए कि अल्लाह उसे क्षमा कर देगा।

"लेकिन शैतान ने घमंड किया, इसलिए वह अभिशप्त हुआ। उस पर अल्लाह की लानत पड़ी।"

घमंड मनुष्य की प्रकृति में नहीं है। शैतान में जो बातें हैं, वे मनुष्य में नहीं हैं। मनुष्य तो विनम्र बन सकता है। लेकिन घमंडी व्यक्ति बिना किसी कारण अपने भीतर उस चीज़ का दावा करने लगता है जो उसकी प्रकृति में है ही नहीं।

आपने फ़रमाया:

"जो चीज़ मनुष्य की प्रकृति में नहीं है, घमंडी व्यक्ति व्यर्थ ही उसका दावा करने

लगता है।"

अर्थात घमंड मनुष्य के स्वभाव का हिस्सा नहीं है, फिर भी वह शैतान की तरह घमंड करने लगता है।

फिर आपने फ़रमाया:

"नबियों में बहुत से गुण होते हैं। उनमें से एक गुण यह है कि वे अपने अहंकार को समाप्त कर देते हैं। उनमें 'मैं' नहीं रहती। वे अपने नफ़्स पर एक प्रकार की मृत्यु ला देते हैं। महानता केवल अल्लाह के लिए है। जो लोग घमंड नहीं करते और विनम्रता से काम लेते हैं, वे कभी नष्ट नहीं होते।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 173, संस्करण 2022)

फिर विनम्रता अपनाने की शिक्षा देते हुए एक अवसर पर आपने फ़रमाया:

"आज भी जमाअत में बहुत से ऐसे लोग हैं कि यदि उनके मन के विरुद्ध कोई छोटी-सी बात भी सुन लें, तो तुरंत उत्तेजित हो जाते हैं। जबकि ऐसे सभी आवेगों को दबाना बहुत आवश्यक है, ताकि मन में धैर्य और सहनशीलता पैदा हो। देखा जाता है कि जब किसी छोटी-सी बात पर बहस शुरू होती है, तो हर व्यक्ति दूसरे को हराने की कोशिश करता है, ताकि किसी तरह मैं विजयी हो जाऊँ।"

ऐसे अवसर पर मन के जोश से बचना चाहिए। झगड़ा समाप्त करने के लिए छोटी-छोटी बातों में भी जानबूझकर स्वयं अपमान सह लेना चाहिए। कभी भी यह कोशिश नहीं करनी चाहिए कि सामने वाले अपने भाई को नीचा दिखाया जाए।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 65, हाशिया, संस्करण 2022)

यदि हम अपने जीवन का निरीक्षण करें तो पाएँगे कि बहुत से लोगों में झूठी आन-बान और अहंकार होता है। इसी कारण झगड़े बढ़ते हैं। लेकिन यदि अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करनी है, तो इन बुराइयों से छुटकारा पाना आवश्यक है।

बल्कि कुछ लोग तो गलत तरीके से दूसरे को नुकसान पहुँचाने की भी कोशिश करते हैं। कभी-कभी शिकायतें करते हैं कि फलाँ स्थान पर मेरा उससे झगड़ा हुआ था, उसने मुझे बुरा कहा था, इसलिए अब मैं उसे किसी भी गलत तरीके से किसी झूठे मुकदमे या सज़ा में फँसाने की कोशिश करूँ।

एक अवसर पर विनम्र लोगों की मृत्यु के बाद की अवस्था का उदाहरण देते हुए आपने फ़रमाया:

"मरना तो हर व्यक्ति के लिए निश्चित है। एक दिन सबको इस दुनिया से जाना है। अंततः सबका यही हाल होना है। लेकिन

जो लोग गरीबी, शांति, सरलता और विनम्रता के साथ इस संसार से जाते हैं, उनके स्वागत के लिए मानो जन्नत स्वयं आगे बढ़कर आती है।

जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने लाज़र के बारे में बयान किया है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 289-290, संस्करण 2022)

लाज़र कौन था?

जिसका यहाँ उल्लेख आया है। यह घटना बाइबल की इंजील, लूका अध्याय 16 में लिखी है:

"एक धनवान व्यक्ति था, जो बैंगनी रंग और बहुत महीन कपड़े पहनता था।" अर्थात वह रंग-बिरंगे, मुलायम और कीमती वस्त्र पहनता था। "और हर दिन आनंद और शानो-शौकत के साथ जीवन बिताता था।"

इंजील में आगे लिखा है:

"और लाज़र नाम का एक गरीब व्यक्ति था, जिसका शरीर फोड़े-फुंसियों और घावों से भरा हुआ था। उसे उस धनवान के दरवाजे पर लाकर छोड़ दिया गया था। उसे इच्छा थी कि धनवान की मेज़ से जो रोटी के टुकड़े गिरें, उन्हीं से अपना पेट भर ले।" अर्थात जो भोजन बचकर बाहर फेंका जाएगा, वही मैं खा लूँ।

"बल्कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे।"

वह इतना कमजोर और लाचार था कि कुत्तों को भी अपने पास से नहीं हटा सकता था। वे आकर उसके घाव चाटते रहते थे।

"और ऐसा हुआ कि वह गरीब मर गया और फ़रिश्ते उसे उठाकर हज़रत इब्राहीम की गोद में ले गए। फिर वह धनवान भी मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। उसने आलम-ए-अरवाह (आत्माओं की दुनिया) में यातना भोगते हुए अपनी आँखें उठाईं।"

बाइबल कहती है कि वह आत्माओं की दुनिया में यातना भोग रहा था। उसने अपनी आँखें उठाईं

"और दूर से इब्राहीम को देखा तथा उनकी गोद में लाज़र को देखा। तब उसने पुकारकर कहा, 'हे पिता इब्राहीम! मुझ पर दया कीजिए और लाज़र को भेजिए कि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में डुबोकर मेरी जीभ को तर कर दे।'"

अर्थात लाज़र को भेज दीजिए, ताकि वह कम-से-कम अपनी उँगली पानी में भिगोकर मेरी जीभ पर लगा दे और मुझे इस यातना से कुछ राहत मिल जाए।

"क्योंकि मैं इस आग में तड़प रहा हूँ।"

इब्राहीम ने कहा:

"बेटा! याद कर कि तू अपनी ज़िंदगी में अपनी अच्छी चीज़ें पा चुका और उसी प्रकार लाज़र ने बुरी बातें झेली। उसे दुनिया में कुछ नहीं मिला। लेकिन अब वह यहाँ आराम पा रहा है और तू तड़प रहा है।"

(लूका, अध्याय 16, आयत 19 से 25)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अंत में घमंड करने वालों का यही परिणाम होता है।

फिर आपने फ़रमाया:

"जब तक मनुष्य किसी गरीब, असहाय और वृद्ध स्त्री के साथ भी वही व्यवहार नहीं करता जो किसी ऊँचे कुल और प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ करता है या करना चाहिए, और जब तक वह अपने आपको हर प्रकार के घमंड, अहंकार और अभिमान से नहीं बचाता, तब तक वह किसी भी स्थिति में अल्लाह तआला के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 138, संस्करण 2022)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"घमंडी व्यक्ति अल्लाह के सिंहासन पर बैठना चाहता है। इसलिए इस बुरी आदत से हमेशा अल्लाह की पनाह माँगो। यदि अल्लाह तआला के सारे वादे भी तुम्हारे साथ हों, तब भी तुम विनम्रता अपनाते रहो।"

अर्थात चाहे अल्लाह की ओर से कितने ही वादे क्यों न मिले हों, फिर भी नम्र बने रहो।

"क्योंकि विनम्रता अपनाने वाला ही अल्लाह का प्रिय होता है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 217, संस्करण 2022)

नम्रता और विनम्रता के संबंध में एक घटना

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"नम्रता और सादगी बहुत उत्तम गुण हैं। जो व्यक्ति स्वयं जरूरतमंद होने के बावजूद घमंड करता है, वह कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच सकता। उसे चाहिए कि वह विनम्रता अपनाए।"

फिर आपने एक घटना सुनाई:

कहा जाता है कि जालीनूस हकीम एक बादशाह के यहाँ नौकरी करता था।

एक दूसरी घटना है कि उस बादशाह की आदत थी कि वह ऐसी घटिया चीज़ें खाता था, जिनके बारे में जालीनूस को पूरा विश्वास था कि उससे बादशाह को कुष्ठ रोग (कोढ़) हो जाएगा।

वह गलत प्रकार का भोजन था। आज भी लोग कहते हैं कि जंक फूड नहीं खाना चाहिए। उस समय भी शायद इसी प्रकार की हानिकारक चीज़ें होती थीं। जालीनूस को विश्वास था कि यह भोजन उसे बीमार कर देगा और अंततः कोढ़ तक हो सकता है।

इसलिए वह हमेशा बादशाह को रोकता था, लेकिन बादशाह नहीं मानता था।

आख़िर तंग आकर जालीनूस वहाँ से अपने देश लौट गया और बादशाह की नौकरी छोड़ दी।

कुछ समय बाद बादशाह के शरीर पर सचमुच कोढ़ के लक्षण दिखाई देने लगे।

तब बादशाह को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने विनम्रता अपनाई, अपने बेटे को सिंहासन पर बैठाया और स्वयं फकीरों जैसे कपड़े पहनकर जालीनूस के पास पहुँचा।

जालीनूस ने उसे पहचान लिया। बादशाह की यह विनम्रता उसे बहुत पसंद आई। अर्थात उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली और स्वयं उसके पास चला आया।

फिर जालीनूस पूरे मन से उसके इलाज में लग गया।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"फिर उसने पूरी लगन से उसका उपचार किया और अल्लाह तआला ने उसे स्वास्थ्य प्रदान कर दिया।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 177-178, संस्करण 2022)

एक सभा में अपने एक इल्हाम का उल्लेख करते हुए आपने जो नसीहत की, उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है:

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम फ़ज्र के समय तशरीफ़ लाए और नमाज़ से पहले कुछ देर सभा की।

उस समय आपने अपने इस इल्हाम का उल्लेख किया:

"इन्नी उहाफ़िज़ु कुल्ल मन फ़िद्दारि इल्लल्लज़ीना अलौ वस्तकबरू।"

अर्थात:

"मैं इस घर में रहने वाले सभी लोगों की रक्षा करूँगा, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने घमंड और ऊँचाई का मार्ग अपनाया।"

इसकी व्याख्या करते हुए आपने फ़रमाया:

"यहाँ घमंड से केवल धन या प्रतिष्ठा का घमंड ही अभिप्रेत नहीं है, बल्कि हर वह व्यक्ति इसमें शामिल है जो अल्लाह के सामने नम्रता और दीनता के साथ उपस्थित नहीं होता और उसके आदेशों का पालन नहीं करता, चाहे वह कितना ही गरीब क्यों न हो।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 443-444, संस्करण 2022)

अर्थात अल्लाह के घर में वही प्रवेश पाएगा जो विनम्र होगा।

फिर एक अवसर पर आपने फ़रमाया:

"जब मनुष्य को सफलता मिल जाती है और कठिनाई तथा विपत्ति का समय समाप्त हो जाता है, तब जो व्यक्ति उस समय भी विनम्रता अपनाए और अल्लाह को याद रखे, वही वास्तव में पूर्ण मनुष्य है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 417, संस्करण 2022)

आपने केवल अपनी जमाअत को ये बातें कहकर ही नसीहत नहीं की, बल्कि अपने जीवन में स्वयं उन पर अमल करके भी दिखाया। जैसा कि शुरुआत में भी मैंने उदाहरण दिया कि स्वयं अल्लाह तआला को भी आपका यह आचरण पसंद आया।

अब आपके अपने जीवन की कुछ घटनाएँ प्रस्तुत हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मुझे मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब ने बताया:

हमारे दादा साहिब, हमारे ताया मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर साहिब को अपनी सभा में कुर्सी देते थे। जब वे सभा में बैठते थे, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब को कुर्सी पर बैठाया जाता था।

लेकिन हमारे वालिद साहिब (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) स्वयं जाकर नीचे फ़र्श पर बैठ जाते थे।

जब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस सभा में जाते, तो वहीं नीचे बैठते जहाँ सामान्य लोग बैठे होते थे।

कभी दादा साहिब उन्हें ऊपर बैठने के लिए कहते तो वे उत्तर देते:

"मैं यहीं अच्छा बैठा हूँ।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, रिवायत संख्या 192, पृष्ठ 199-200)

आपके मन में कभी ऊँचे स्थान पर बैठने की इच्छा नहीं हुई। आप हमेशा सामान्य लोगों के बीच बैठते थे।

जैसा कि आपने पहले भी नसीहत की थी कि यदि मेज़बान उचित समझेगा तो स्वयं अच्छी जगह बैठा देगा। आपने अपने पूरे जीवन में स्वयं इसी शिक्षा पर अमल किया।

इसी प्रकार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एक और घटना बयान करते हैं:

क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने मुझसे कहा:

"एक बार हमने हज़रत साहिब से पूछा कि हदीस में आता है कि सभी नबियों ने बकरियाँ चराई हैं। क्या हुज़ूर ने भी कभी बकरियाँ चराई थीं?"

आपने फ़रमाया:

"हाँ। एक बार मैं खेतों की ओर गया। वहाँ एक व्यक्ति बकरियाँ चरा रहा था। उसने मुझसे कहा कि मैं थोड़ी देर के लिए एक काम से जा रहा हूँ, आप मेरी बकरियों का ध्यान रखिए। लेकिन वह गया तो शाम तक वापस नहीं आया। उसके आने तक हमें उसकी बकरियाँ चरानी पड़ीं।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, रिवायत संख्या 108, पृष्ठ 88)

आप पूरे दिन उसकी बकरियाँ चराते रहे, जबकि आप उस क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित परिवार के पुत्र थे। फिर भी आपने इसे अपने सम्मान के विरुद्ध नहीं समझा और शाम तक अपने ही एक खेतिहर कर्मचारी (मज़ारे) की बकरियाँ चराते रहे।

इसी प्रकार आपकी अपनी विनम्रता का वर्णन करते हुए हज़रत ख़्वाजा अब्दुर्रहमान साहिब, जो अख़बार अल-फ़ज़्ल के कार्यालय में कार्यरत थे, बयान करते हैं:

"मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर पहरेदारी की है।"

मैं बाहर बैठता था, सुरक्षा के लिए, आने-जाने वालों की सूचना देने या आवश्यक काम करने के लिए।

वे आगे कहते हैं:

"मैं हज़रत साहिब के घर के अंदर भी लंबे समय तक रहा हूँ।

मैंने कभी हज़रत साहिब को 'जी' के अलावा कोई दूसरा संबोधन प्रयोग करते नहीं सुना।

जब भी वे मुझसे बात करते, हमेशा 'जी' कहकर बात करते।

मैंने उनमें कभी घमंड या अहंकार नहीं देखा।

वे हमेशा बहुत नम्रता से बात करते थे।

उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी।

मैंने कभी उनके माथे पर शिकन नहीं देखी।

और मैंने कभी यह नहीं सुना कि हज़रत साहिब ने किसी को 'ओए', 'अबे' या 'तू' जैसे अपमानजनक शब्दों से पुकारा हो।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 294-295)

आप कभी किसी के लिए "ओए" या "तू" जैसे अपमानजनक शब्दों का प्रयोग नहीं करते थे। आप हमेशा सम्मान के साथ पेश आते थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया कि

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को घर का कोई काम करने में कभी संकोच नहीं होता था। आप स्वयं चारपाइयाँ बिछा लेते थे। फ़र्श साफ़ कर लेते थे।" अर्थात आज जिसे हम पोछा (Mop) लगाना कहते हैं, वह भी स्वयं कर लेते थे। "बिस्तर भी स्वयं ठीक कर लिया करते थे और झाड़ू भी लगा लेते थे। यदि अचानक तेज़ बारिश आ जाती, जबकि छोटे बच्चे चारपाइयों पर सो रहे होते, तो हज़रत एक ओर से स्वयं उनकी चारपाई उठाते और दूसरी ओर से कोई दूसरा व्यक्ति पकड़ता, फिर उसे बरामदे के अंदर ले आते।"

आजकल तो ए.सी. और पंखे हैं, लेकिन उस समय ऐसा नहीं था। गर्मियों में लोग आँगन में सोते थे। यदि रात को आँधी या बारिश आ जाती, तो चारपाइयाँ उठाकर बरामदे में लानी पड़ती थीं। ऐसे समय आप बच्चों की चारपाइयाँ उठाने में स्वयं सहायता करते थे।

"यदि कोई व्यक्ति ऐसे समय या सुबह बच्चों को झकझोरकर जगाना चाहता, तो हज़रत मना कर देते और फ़रमाते कि इस तरह अचानक हिलाने और ज़ोर से चिल्लाने से बच्चा डर जाता है। उसे धीरे-धीरे आवाज़ देकर उठाओ।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, रिवायत संख्या 559, पृष्ठ 543)

फिर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ही एक और रिवायत बयान करते हैं कि मुझे मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब ने बताया, और उन्होंने यह घटना आगे मौलवी रहीम बख़्श साहिब से सुनी कि

"वालिद साहिब बाहर वाले चौबारे में रहते थे। वहीं उनके लिए खाना भेजा जाता था। घर के बाहर वाले हिस्से में जो भी भोजन बनता, वे बिना किसी शिकायत के वही खा लेते थे।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, रिवायत संख्या 189, पृष्ठ 199)

मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बताया कि वालिद साहिब घर के बाहर बने ऊपर वाले कमरे (चौबारे) में रहते थे। वहीं उनके लिए भोजन भेजा जाता था।

पहले भी यह वर्णन आया है कि आप रोज़े रखते थे और कई बार अपना भोजन गरीबों में बाँट दिया करते थे। फिर भी जब भी उनके लिए भोजन भेजा जाता, जैसा भी भोजन होता, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बिना कोई शिकायत किए वही खा लेते थे। आपने कभी किसी प्रकार की शिकायत नहीं की।

जमाअत के इतिहास में एक बहुत प्रसिद्ध घटना है। यह आपके दावे से पहले की बात है।

जब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब दिल्ली से शिक्षा प्राप्त करके नए-नए आलिम बनकर बटाला लौटे, तो पूरे क्षेत्र में उनकी बहुत प्रसिद्धि हो गई।

उस समय विभिन्न धार्मिक मुद्दों पर मुक़ल्लिदीन (जो किसी फ़िक़्ह के इमाम, जैसे हनफ़ी, मालिकी आदि के अनुयायी होते हैं) और ग़ैर-मुक़ल्लिदीन (जो किसी फ़िक़्ह के इमाम की तक़लीद नहीं करते, जैसे अहले-हदीस आदि) के बीच विद्वत्तापूर्ण बहसें आम थीं।

जब बटाला के लोगों ने यह विवाद देखा, तो उनकी नज़र हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम पर गई। उन्होंने सोचा कि इनका मुकाबला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कराया जाए, क्योंकि उनका विश्वास था कि केवल आप ही इस युवा मौलवी को उत्तर दे सकते हैं।

बहुत आग्रह के बाद हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम इस बहस के लिए तैयार हुए। पहले आप तैयार नहीं हो रहे थे, लेकिन लोगों के बार-बार अनुरोध करने पर सहमत हो गए।

बहस के स्थान पर दोनों पक्षों के समर्थकों की बड़ी संख्या एकत्र हो गई। विशेष रूप से मुकल्लिदीन का समूह पहले से ही अपनी विजय को लेकर बहुत आश्वस्त था, और होना भी चाहिए था, क्योंकि आज उनके अनुसार एक महान विद्वान बहस के लिए आए थे।

उनका विचार था कि आज तो जीत निश्चित है, क्योंकि हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम स्वयं आए हैं। उनका विश्वास था कि आपकी तर्कशक्ति इतनी प्रभावशाली थी कि सामने वाला व्यक्ति जाल में फँसी चिड़िया की तरह असहाय हो जाता था।

जब हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम बहस के स्थान पर पहुँचे, तो आपने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब से पूछा:

"आपके विचार, मान्यताएँ और विश्वास क्या हैं? पहले उन्हें बताइए ताकि यदि उनमें कोई त्रुटि हो तो उसका उत्तर दिया जाए।"

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब ने कहा:

"मेरे निकट सबसे पहले क़ुरआन करीम प्रमाण है, उसके बाद हदीस और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है, और उसी के अनुसार निर्णय किया जाएगा।"

जब हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने यह सुना, तो आपने फ़रमाया:

"मेरे विचार में आपके विश्वासों और विचारों में ऐसी कोई बात नहीं है जिस पर आपत्ति की जाए या जिसका खंडन किया जाए।"

जो लोग आपको वहाँ लेकर गए थे, उन्हें लगा कि इस प्रकार तो हमारी हार हो जाएगी और विरोधी पक्ष अपनी विजय का ढोल पीटेगा।

उनकी इच्छा थी कि किसी न किसी प्रकार मौलवी साहिब को इस बहस में पराजित या लज्जित किया जाए।

लेकिन हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम जीत और हार के अभिमान या अपमान से बिल्कुल बेपरवाह रहे और अत्यंत विनम्रता तथा नम्र स्वभाव का परिचय देते हुए वहाँ से वापस लौट आए।

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने स्वयं इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है:

"सन् 1868 या 1869 में एक अद्भुत इल्हाम उर्दू भाषा में हुआ था, जिसे यहाँ लिखना उचित है। इसकी पृष्ठभूमि यह थी कि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, जो कभी इस विनम्र सेवक के साथ पढ़ते थे, जब नए-नए मौलवी बनकर बटाला आए, तो बटाला के लोगों को उनके कुछ विचार पसंद नहीं आए। तब एक व्यक्ति ने मुझे बहुत आग्रह करके मौलवी साहिब से एक विवादास्पद विषय पर बहस करने के लिए तैयार किया।"

"उसके बहुत आग्रह करने पर मैं शाम के समय उसके साथ मौलवी साहिब के घर गया। वहाँ उन्हें और उनके पिता को मस्जिद में पाया। संक्षेप में यह कि मैंने उस समय मौलवी साहिब का भाषण सुना और मुझे मालूम हुआ कि उसमें ऐसी कोई बात नहीं थी जिस पर आपत्ति की जाए। इसलिए केवल अल्लाह की ख़ातिर मैंने बहस छोड़ दी।"

"रात को अल्लाह तआला ने अपने इल्हाम में इसी बहस छोड़ने की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया:

'तेरा ख़ुदा तेरे इस कार्य से प्रसन्न हुआ और वह तुझे इतनी बरकत देगा कि बादशाह भी तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।'

"इसके बाद मुझे एक कश्फ़ (आध्यात्मिक दर्शन) में वे बादशाह दिखाए गए जो घोड़ों पर सवार थे। क्योंकि मैंने केवल अल्लाह और उसके रसूल की ख़ातिर विनम्रता और दीनता अपनाई थी, इसलिए उस महान उपकारी ने यह पसंद नहीं किया कि मुझे बिना प्रतिफल के छोड़ दे।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग चतुर्थ, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 1, पृष्ठ 621-622, शेष हाशिया, हाशिया संख्या 3)

हज़रत शेख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पुस्तक हयात-ए-अहमद में इस घटना का उल्लेख करते हुए एक टिप्पणी भी लिखी है। वे लिखते हैं:

"लोग सामान्य बहसों के ढंग और वाद-विवाद करने वालों की स्थिति से भली-भाँति परिचित हैं। अपने विरोधी की सही बात को स्वीकार कर लेना और सार्वजनिक रूप से उसे मान लेना अत्यंत कठिन होता है। मैं उलेमा का अपमान नहीं करता, लेकिन सामान्यतः उलेमा के लिए जान दे देना आसान होता है, पर अपनी गलती स्वीकार करना तो दूर, विरोधी की सही और तर्कसंगत बात को मान लेने की आदत भी नहीं रही।"

आज भी स्थिति लगभग ऐसी ही है।

"लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्थिति पूर्णतः सच्ची नीयत और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने की भावना में डूबी हुई थी। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि आप स्वभावतः यह पसंद नहीं करते थे कि मुसलमान आपस में आंतरिक संघर्ष करें और धार्मिक मतभेदों के कारण सत्य की खोज और सत्य बोलना छोड़ दें।"

"फिर यह कितनी बड़ी हिम्मत और साहस की बात है कि जिस व्यक्ति से बहस करने जाते हैं, उसके घर पहुँचते हैं, उसके ज्ञान और प्रभाव से तनिक भी नहीं घबराते, लेकिन उसके मुँह से एक सही बात सुनते ही इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं करते कि लोग क्या कहेंगे। लोग इसे बहस से बचना समझेंगे या विरोधी से प्रभावित होना कहेंगे। जो बात सत्य थी, उसे स्वीकार कर लिया।"

जो बात सत्य थी, उसे स्वीकार कर लिया। आपने इस बात की कोई चिंता नहीं की कि लोग क्या कहेंगे।

"और उसकी सत्यता पर अपने स्वीकार की मुहर लगा दी। ऐसा कार्य नबियों अलैहिमुस्सलाम और उनके विशेष अनुयायियों के जीवन के अतिरिक्त कहीं और देखने को नहीं मिलता। धर्म के प्रति सच्ची निष्ठा और अपने अहंकार तथा सांसारिक इच्छाओं को पूरी तरह कुचल देने की शक्ति केवल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ही मिल सकती है।"

"फिर इस कार्य की स्वीकृति के चिन्ह भी तुरंत प्रकट हो गए और अल्लाह तआला ने अपने इल्हाम के माध्यम से शुभ समाचार दिया तथा मानो 'रज़ियल्लाहु अन्हु' का प्रमाण-पत्र प्रदान कर दिया।"

"मनुष्य चाहता है कि संसार में उसकी प्रतिष्ठा बढ़े और लोग उसकी ओर आकर्षित हों। लेकिन अल्लाह तआला ने इस कार्य के फलस्वरूप यह शुभ समाचार दिया कि 'बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।'"

"यह वह समय था जब अभी 'बराहीन-ए-अहमदिया' की रचना का विचार भी उत्पन्न नहीं हुआ था, दावे की तो बात ही दूर है। आप संसार से लगभग विरक्त जीवन बिता रहे थे। नौकरी भी छोड़ चुके थे। भविष्य के जीवन-निर्वाह की चिंता स्वयं आपको नहीं थी, लेकिन घरवालों को अवश्य होती थी कि आगे क्या होगा।"

उसी समय यह इल्हाम हुआ कि "बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।" जबकि उस समय आपके पास कुछ भी नहीं था।

"हज़रत वालिद साहिब भी उस समय जीवित थे। जीवन का वह दौर था जब सामान्य संसारिक व्यक्ति के मन में अनेक आशाएँ होती हैं। यह वह आयु होती है जब आत्मसम्मान, प्रतिष्ठा और स्वयं को स्थापित करने की भावनाएँ पूरे जोश में होती हैं। अपनी बात पर अड़े रहने और ज़िद करने की प्रवृत्ति भी होती है।"

"ऐसे समय में हज़रत मिर्ज़ा साहिब एक प्रसिद्ध मौलवी से बहस करने जाते हैं, लेकिन उसकी बात को सही पाकर उसे स्वीकार कर लेते हैं। न उन्हें इस बात की चिंता होती है कि लोग क्या कहेंगे, और न इस बात की कि उस व्यक्ति का समर्थन करने से, जिसके कुछ विचारों के कारण लोग पहले से विरोध कर रहे हैं, स्वयं उनके विरुद्ध भी तूफ़ान खड़ा हो सकता है।"

"आप विचार कीजिए कि उस समय हनफ़ियों और ग़ैर-मुक़ल्लिदों के बीच कठोर संघर्ष चल रहा था। ऐसे वातावरण में किसी अहले-हदीस की सार्वजनिक रूप से पुष्टि करना अपने ऊपर अनेक मुसीबतें मोल लेने के समान था। फिर भी हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब की पुष्टि कर दी, जबकि उन्हें तो उनसे बहस करने के लिए बुलाया गया था।"

"यह समझना बिल्कुल मूर्खता होगी कि मौलवी अबू सईद साहिब के ज्ञान या प्रभाव के कारण आप मौन हो गए थे। यदि ऐसा होता, तो बाद के वर्षों में मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के साथ आपके अनेक प्रत्यक्ष और लिखित वाद-विवाद कभी न होते। और न ही यह मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शेर उनके सामने इस प्रकार डटकर खड़ा होता।"

अर्थात यह नहीं कहा जा सकता कि उस समय आप उनके प्रभाव में आ गए थे, क्योंकि इतिहास गवाह है कि बाद में आपने कई बार मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब को चुनौती दी, उन्हें बुलाया और स्पष्ट किया कि कहाँ वे सही हैं और कहाँ गलत।

फिर वे लिखते हैं:

"कभी भी और किसी भी परिस्थिति में उनके ज्ञान या प्रभाव का भय एक क्षण के लिए भी आप पर प्रभावी नहीं हुआ। ये ऐतिहासिक घटनाएँ हैं और कोई उनका इनकार नहीं कर सकता। इसलिए ऐसी स्थिति में यह समझना कि आप उनके प्रभाव में आ गए थे, केवल अज्ञानता है। वास्तव में इसके पीछे केवल एक ही कारण था, और वह था—धर्म के प्रति पूर्ण निष्कपटता (इख़लास फ़िद्दीन)।"

(हयात-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 291-292)

अपने आका व पालनहार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा और सुन्नत के अनुसार

दीन के मामले में आप में सच्ची निष्ठा थी। इसलिए उस समय आपने सत्य को स्वीकार कर लिया। आपने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी से डरकर यह बात नहीं मानी थी, क्योंकि बाद में आपने उन्हें कई बार चुनौती भी दी, उन्हें बुलाया भी और उन्हें सही रास्ते पर आने की नसीहत भी की।

अपने एक पत्र में आपने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को लिखा। उस पत्र में आपने उन्हें सत्य का संदेश भी पहुँचाया, लेकिन

अल्लाह की ओर से नियुक्त होने के इतने ऊँचे दर्जे पर होने के बावजूद अपने बारे में अत्यन्त विनम्रता और नम्र स्वभाव का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया।

इसलिए आप लिखते हैं:

"मेरे आदरणीय, सम्मानित भाई मौलवी साहब, सल्लमहुतआला... आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। इस विनीत व्यक्ति के लिए सबसे कठिन बात यह है..." पत्र में आपने "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" भी लिखा था। आगे लिखते हैं कि "इस विनीत व्यक्ति के लिए सबसे कठिन बात यह है कि मेरी तबीयत अक्सर अचानक इतनी अधिक खराब हो जाती है कि मृत्यु सामने दिखाई देने लगती है, और कुछ न कुछ बीमारी तो दिन-रात साथ ही रहती है। यदि अधिक बातचीत करूँ तो बीमारी का दौरा शुरू हो जाता है। यदि अधिक सोच-विचार करूँ तो वही हालत हो जाती है। चूँकि आपका पिछला पत्र आया, उससे ऐसा लगा कि मानो मौलवी अब्दुल जब्बार साहब की सम्मति से लिखा गया है।" अर्थात दोनों ने मिलकर पत्र लिखा है। "इसी कारण उसी प्रकार उत्तर लिखा गया। यह विनीत व्यक्ति बीमारी के अत्यधिक प्रभाव से बिल्कुल असमर्थ हो गया है।" इस समय बीमारी बहुत अधिक है। "मुझमें यह शक्ति कहाँ कि मौखिक या लिखित वाद-विवाद शुरू करूँ। केवल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ये तीनों पुस्तकें" अर्थात फ़त्ह-ए-इस्लाम, तौज़ीहुल-मराम और इज़ालह-ए-औहाम "लिखी गईं। वह भी इस प्रकार कि अधिकतर दूसरा व्यक्ति मेरी बातें लिखता गया और बहुत कम ऐसा हुआ कि मैंने स्वयं अपने हाथ से कुछ लिखा हो। इतना समय भी नहीं मिलता कि लिखे हुए वाक्यों को अच्छी तरह ठीक कर सकूँ। हदीस के बारे में आपकी जानकारी बहुत व्यापक है।" आप मौलवी साहब को लिख रहे हैं कि मैंने तो ये तीन पुस्तकें लिखी हैं, जबकि आपकी हदीस की जानकारी बहुत विस्तृत है। "यह विनीत व्यक्ति एक उम्मी (अनपढ़) और अज्ञानी आदमी है। न इबादत है, न रियाज़त, न ज्ञान है, न योग्यता। कुल मिलाकर मुझमें कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला की ओर से एक आदेश था, जो बिल्कुल निश्चित और सत्य था। इस विनीत व्यक्ति ने उसे पहुँचा दिया। अब उसे मानना या न मानना, हर व्यक्ति की अपनी राय और समझ पर निर्भर है।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 319-320, पत्र संख्या 10)

आपने अत्यन्त विनम्रता के साथ उन्हें तबलीग़ भी की।

हज़रत मुंशी अहमद जान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक प्रकाशित पत्र भी है। उसमें भी आपकी विनम्रता और नम्र स्वभाव का उल्लेख मिलता है।

आप लिखते हैं:

"आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अल्लाह तआला के उपकारों का धन्यवाद अदा नहीं किया जा सकता, जिसने इस सबसे छोटे बंदे के लिए ऐसे सच्चे मित्र प्रदान किए, जिनका अस्तित्व इस तुच्छ व्यक्ति के लिए सम्मान और गौरव का कारण है। अल्लाह तआला आपको सुखी और प्रसन्न रखे और इन सच्चे प्रेमपूर्ण भावों का आपको बदला दे। यह विनीत व्यक्ति अत्यन्त अयोग्य और तुच्छ है। यह केवल अरहमुर्राहिमीन (सबसे अधिक दयालु) का उपकार और कृपा है कि बिना किसी योग्यता के इस अयोग्य पर लगातार अपने अनगिनत फ़ज़्ल बरसा रहा है।" अर्थात वह अपने फ़ज़्ल की वर्षा कर रहा है। "वह मेरी भूल पर भी उपकार करता है, मेरी कमियों को देखकर भी कृपा करता है, मेरे अत्याचारों को देखकर भी इनाम देता है। वास्तव में वही अत्यन्त दयालु और कृपालु है। मैं ऐसी भाषा कहाँ से लाऊँ जिससे उसका धन्यवाद अदा कर सकूँ। यह विनीत व्यक्ति कुछ भी नहीं, अत्यन्त तुच्छ, निर्धन और सर्वथा असहाय है। उसने मुझे मिट्टी में पड़ा पाया और उठा लिया।" अर्थात अल्लाह तआला ने मुझे धरती पर पड़ा पाया और उठा लिया। "मुझे पूर्णतः अयोग्य पाया और मेरी कमियों पर पर्दा डाला। मेरी कमजोरी को देखकर स्वयं मुझे शक्ति दी और मेरी अज्ञानता को देखकर स्वयं मुझे ज्ञान दिया।" जो भी ज्ञान मेरे पास है, वह अल्लाह तआला का दिया हुआ है। "उसने मुझ पर इतने उपकार किए हैं कि मैं उन्हें गिन नहीं सकता। उन्हीं उपकारों में से एक यह भी है कि उसने आप जैसे बड़े भाइयों के दिलों में इस तुच्छ व्यक्ति की मुहब्बत डाल दी। इसलिए मुझे विश्वास है कि वही इस प्रेम को और बढ़ाएगा तथा उन सब पर अपना फ़ज़्ल करेगा जो इस सिलसिले से जुड़े हैं।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 25-26, सूफ़ी अहमद जान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम पत्र, पत्र संख्या 3)

जो अब मेरी जमाअत से जुड़े हैं, अल्लाह तआला उन्हें उन्नति प्रदान करेगा।

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु इस पत्र को प्रकाशित करते हुए एक टिप्पणी में लिखते हैं:

"इस पत्र से स्पष्ट होता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हृदय पर अल्लाह तआला के प्रेम और महानता का अत्यन्त गहरा प्रभाव था। साथ ही आपकी विनम्रता, सादगी और नम्रता भी अपने चरम पर दिखाई देती है। इन्हीं अनगिनत फ़ज़्लों और उपकारों के प्रति कृतज्ञता की भावना आपके भीतर बोल रही है।"

(मकतूबात-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 26)

जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मसीह के समान होने का दावा किया, तो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अत्यन्त कठोर विरोध शुरू कर दिया। उन्होंने अत्यन्त अहंकारपूर्ण ढंग से अपमानजनक शब्दों और उपाधियों के साथ आपको पत्र लिखने शुरू कर दिए। अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्नह में भी उन्होंने अशिष्ट भाषा का प्रयोग करना शुरू कर दिया और घोषणा की कि यह एक फ़ित्ना है तथा मैं इस जमाअत को तितर-बितर करके रख दूँगा। यहाँ तक कि उन्होंने यह भी लिखा कि जिस प्रकार मैंने इन्हें आसमान पर चढ़ाया था, उसी प्रकार अब मैं इन्हें ज़मीन पर गिराऊँगा। अर्थात (नऊज़ुबिल्लाह) उनका दावा था कि उन्होंने अपनी प्रशंसा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ऊँचा स्थान दिलाया था और अब वे उन्हें नीचे गिराएँगे।

(माख़ूज़ अज़ रिसाला इशाअतुस्सुन्नह, 1890, संख्या 1, जिल्द 13, पृष्ठ 3-4)

मौलवी साहब का भ्रम था कि बराहीन-ए-अहमदिया पर मेरी समीक्षा ने हज़रत को मानो आसमान पर पहुँचा दिया था। लेकिन उनकी सारी बदज़ुबानी, अहंकारपूर्ण भाषा और पत्राचार के उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस धैर्य, सहनशीलता, विनम्रता और नम्र स्वभाव का परिचय दिया, उसने हज़रत ईसा नासरी अलैहिस्सलाम की सहनशीलता की भी याद दिला दी। यहाँ मौलवी साहब के नाम लिखा गया आपका केवल एक पत्र प्रस्तुत किया जाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि

उनकी बदज़ुबानी और अहंकार के मुकाबले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हृदय में केवल हमदर्दी, भलाई की भावना, विनम्रता और नम्रता का

शेष पृष्ठ 9 पर

पृष्ठ 1 का शेष

घमंड मत करो, यदि दिल पाक नहीं है। केवल हाथ पर हाथ रख देने से क्या लाभ होगा, जबकि दिल दूर हो? जब दिल और ज़ुबान में एक जैसा भाव नहीं है, तो ऐसे लोग मेरे हाथ पर हाथ रखकर केवल दिखावे का स्वीकार करते हैं। इसलिए याद रखो कि ऐसे व्यक्ति को दुगुना दंड मिलेगा। लेकिन जो सच्चे मन से स्वीकार करता है, उसके बड़े-बड़े गुनाह भी माफ़ कर दिए जाते हैं और उसे एक नई ज़िंदगी मिलती है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 65, अल-हकम, 14 फ़रवरी 1903)

फिर एक अन्य स्थान पर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इंसान की रचना में दो प्रकार की सुंदरताएँ होती हैं। एक व्यवहार की सुंदरता है। उसका अर्थ यह है कि इंसान अल्लाह तआला की सभी अमानतों और उससे किए गए वादों को पूरा करने में इस बात का पूरा ध्यान रखे कि जहाँ तक उसकी शक्ति हो, उनमें कोई कमी या लापरवाही न होने पाए। जैसा कि अल्लाह तआला के कलाम में 'رَاعُوْنَ' (राऊन) शब्द इसी ओर संकेत करता है।

इसी प्रकार आवश्यक है कि इंसान लोगों की अमानतों और उनसे किए गए वादों के बारे में भी यही सावधानी और ईमानदारी बरते। अर्थात अल्लाह के अधिकार (हुक़ूक़ुल्लाह) और बंदों के अधिकार (हुक़ूक़ुल इबाद)—दोनों को निभाने में तक़वा (धर्मपरायणता) से काम ले। यही व्यवहार की सुंदरता है, या यूँ कहो कि यही आध्यात्मिक सुंदरता है।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया, भाग पंचम, पृष्ठ 218)

पृष्ठ 1 का शेष

अमानतें एक-दूसरे के पास सुरक्षित रखते हैं।

इसलिए केवल क़र्ज़ के मामलों में ही नहीं, बल्कि अमानत के मामले में भी तुम्हें अल्लाह का तक़वा अपनाना चाहिए। ऐसा न हो कि अमानत लेने वाला उसे वापस लेने आए और तुम उसे लौटाने में टालमटोल करने लग जाओ।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 2, पृष्ठ 648–649)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 09-16 July 2026 Issue No. 28-29

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{74} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। मियाँ फखरुद्दीन साहब मुल्तानी ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बार मेरे वालिद यहाँ आए। वे बहुत सख्त विरोधी थे और बुरा-भला कहा करते थे। यहाँ आकर भी उन्होंने बहुत तीखी बातें कीं। जब वे मुल्तान में थे तो कहा करते थे कि यदि मैं कभी मिर्ज़ा से मिला, तो (नऊज़ुबिल्लाह) उसके मुँह पर भी लानत भेजूँगा। अर्थात जो बातें यहाँ कहता हूँ, वही उसके सामने भी कहूँगा।

ख़ैर, मैं उन्हें हज़रत साहिब के पास ले गया। जब हुज़ूर बाहर तशरीफ़ लाए तो वे अदब के साथ खड़े हो गए। फिर डरकर पीछे हटे और बैठ गए। उस समय सभा में और भी लोग मौजूद थे। हुज़ूर ने बैठे-बैठे तकरीर शुरू की और कई बार फ़रमाया कि हम तो चाहते हैं कि लोग हमारे पास आएँ, हमारी बातें सुनें, हमसे सवाल करें, और हम तो उनके लिए खर्च करने को भी तैयार हैं। लेकिन लोग पहले तो आते ही नहीं, और अगर आ भी जाते हैं तो चुपचाप बैठे रहते हैं, फिर पीछे जाकर बातें बनाते हैं।

संक्षेप में, हुज़ूर ने खुलकर तकरीर की, तबलीग़ की और उन्हें कई बार बात करने के लिए उभारा। मेरे वालिद बहुत हाज़िरजवाब थे, लेकिन उस समय जैसे उनके मुँह पर मुहर लग गई हो। वे एक शब्द भी न बोल सके। वहाँ से उठकर मैंने उनसे पूछा कि आप वहाँ बोले क्यों नहीं? उन्होंने कोई बात कहकर टाल दिया।

मियाँ फखरुद्दीन साहब कहा करते थे कि हज़रत साहिब ने उस तकरीर में मेरे वालिद को विशेष रूप से संबोधित नहीं किया था, बल्कि आम तकरीर फरमाई थी।

{75} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ा सानी ने बयान किया कि एक बार गुजरात का रहने वाला एक हिंदू किसी बारात के साथ कादियान आया। वह व्यक्ति इल्म-ए-तवज्जोह (ध्यान की शक्ति) का बहुत बड़ा माहिर था। उसने अपने साथियों से कहा कि हम लोग कादियान आए हुए हैं, चलो मिर्ज़ा साहिब से मिलते हैं। उसका इरादा यह था कि लोगों के सामने अपनी तवज्जोह का असर हज़रत साहिब पर डालकर, भरी सभा में उनसे कोई बेहूदा हरकत कराए।

जब वह मस्जिद में हुज़ूर से मिला तो उसने अपने इस इल्म के द्वारा आप पर असर डालना शुरू किया। लेकिन थोड़ी देर बाद वह अचानक काँप उठा, फिर स्वयं को संभालकर बैठ गया और अपना काम फिर शुरू कर दिया। हज़रत साहिब अपनी बातचीत में लगे रहे। कुछ देर बाद उसके पूरे शरीर पर फिर ज़ोर का कंपन हुआ और उसकी ज़बान से भी डर की एक आवाज़ निकली, लेकिन वह फिर संभल गया।

मगर थोड़ी ही देर बाद उसने एक ज़ोर की चीख मारी और बेकाबू होकर मस्जिद से भाग निकला। वह बिना जूते पहने ही नीचे की ओर भाग गया। उसके साथी और दूसरे लोग उसके पीछे दौड़े, उसे पकड़कर संभाला। जब उसे होश आया तो उसने बताया कि मैं इल्म-ए-तवज्जोह का बहुत बड़ा माहिर हूँ। मेरा इरादा था कि मैं मिर्ज़ा साहिब पर अपनी तवज्जोह डालूँ और सभा में उनसे कोई अनुचित हरकत करवा दूँ।

लेकिन जब मैंने तवज्जोह डाली तो मैंने देखा कि मेरे सामने थोड़ी दूरी पर एक शेर बैठा हुआ है। उसे देखकर मैं काँप गया, लेकिन मैंने अपने मन में स्वयं को डाँटा कि यह मेरा भ्रम है। फिर मैंने दोबारा मिर्ज़ा साहिब पर तवज्जोह डालनी शुरू की तो देखा कि वही शेर फिर मेरे सामने है और अब पहले से अधिक मेरे निकट आ गया है। इससे मेरे पूरे शरीर में फिर ज़ोर का कंपन हुआ, लेकिन मैं फिर संभल गया। मैंने अपने मन को बहुत डाँटा कि व्यर्थ ही मेरे दिल में भ्रम के कारण डर पैदा हो गया है।

फिर मैंने अपना दिल मज़बूत किया, अपनी पूरी शक्ति इकट्ठी की और पूरी ताकत के साथ दोबारा मिर्ज़ा साहिब पर अपनी तवज्जोह का असर डालना चाहा। तभी मैंने देखा कि वही शेर मुझ पर छलांग लगाकर हमला करने आ रहा है। उस समय मैं अपने होश खो बैठा, ज़ोर से चीखा और वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

हज़रत ख़लीफ़ा सानी बयान फ़रमाते थे कि उसके बाद वह व्यक्ति हज़रत साहिब का बहुत बड़ा श्रद्धालु हो गया था और जब तक जीवित रहा, आपसे पत्र-व्यवहार करता रहा।

{76} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि मुंशी मुहम्मद अरोड़ा साहब मरहूम, कपूरथला निवासी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़िक्र करते हुए कहा करते थे कि हम तो आपके चेहरे के दर्शन के भूखे थे। जब हम बीमार भी होते थे तो केवल आपका चेहरा देखकर ही अच्छे हो जाते थे।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि मुंशी साहब मरहूम पुराने और सच्चे निष्ठावान साथियों में से थे, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आशिकों में उनका स्थान पहली पंक्ति में गिना जाना चाहिए।

{77} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब ख़लीफ़ा अव्वल ने बयान किया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी यात्रा पर थे। जब आप स्टेशन पहुँचे तो ट्रेन आने में अभी देर थी। आप अपनी बेगम साहिबा के साथ स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर टहलने लगे।

यह देखकर मौलवी अब्दुल करीम साहब, जिनका स्वभाव बहुत गैरतमंद और जोशीला था, मेरे पास आए और कहने लगे कि यहाँ बहुत लोग हैं और उनमें गैर लोग भी इधर-उधर घूम रहे हैं। आप हज़रत साहिब से अर्ज़ करें कि बेगम साहिबा को किसी अलग स्थान पर बैठा दिया जाए।

मौलवी नूरुद्दीन साहब फ़रमाते थे कि मैंने कहा, मैं तो यह बात नहीं कहूँगा, आप स्वयं कहकर देख लें। मजबूर होकर मौलवी अब्दुल करीम साहब खुद हज़रत साहिब के पास गए और कहा, "हुज़ूर! यहाँ बहुत लोग हैं, बेगम साहिबा को किसी अलग जगह बैठा दें।"

हज़रत साहिब ने फ़रमाया, "जाइए जी, मैं ऐसे पर्दे का क़ायल नहीं हूँ।"

मौलवी साहब फ़रमाते थे कि इसके बाद मौलवी अब्दुल करीम साहब सिर झुकाए हुए मेरी तरफ़ आए। मैंने कहा, "मौलवी साहब! जवाब ले आए?"

{78} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। ख़ाकसार अर्ज करता है कि जिन दिनों हमारे छोटे भाई मुबारक अहमद बीमार थे, एक बार **हज़रत मसीह मौऊद** ने **हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब, ख़लीफ़ा-ए-अव्वल** को उन्हें देखने के लिए घर बुलाया। उस समय हुज़ूर आँगन में एक चारपाई पर विराजमान थे और आँगन में कोई दरी या फर्श आदि नहीं बिछा था।

मौलवी साहिब आते ही हुज़ूर की चारपाई के पास ज़मीन पर बैठ गए। हज़रत साहिब ने फ़रमाया, "मौलवी साहिब, चारपाई पर बैठिए।"

मौलवी साहिब ने अर्ज किया, "हुज़ूर, मैं बैठा हुआ हूँ," और थोड़ा-सा ऊपर होकर अपना हाथ चारपाई पर रख लिया। लेकिन जब हज़रत साहिब ने दोबारा फ़रमाया, तो मौलवी साहिब उठे और चारपाई के एक किनारे पर, पायताने की ओर बैठ गए।

खाकसार अर्ज करता है कि हज़रत मौलवी साहिब में आज्ञापालन और अदब का गुण सर्वोच्च दर्जे का था।

{79} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हज़रत ख़लीफ़ा सानी (अय्यदहुल्लाह) ने बयान किया कि **हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम** के ज़माने में **जमाअत अहमदिया कपूरथला** और गैर-अहमदियों के बीच वहाँ की मस्जिद के संबंध में एक मुक़दमा हो गया।

जिस जज के पास यह मुक़दमा गया, वह स्वयं गैर-अहमदी था और विरोधी भी था। उसने इस मुक़दमे में विरोधी रुख़ अपनाना शुरू कर दिया।

इस स्थिति में कपूरथला की जमाअत घबरा गई और उसने हज़रत मसीह मौऊद को पत्र लिखकर दुआ की दरख़्वास्त की। हज़रत साहिब ने उन्हें जवाब में लिखा:

"यदि मैं सच्चा हूँ, तो मस्जिद तुम्हें मिल जाएगी।"

लेकिन जज पहले की तरह विरोधी रवैया अपनाए रहा। आखिर उसने अहमदियों के ख़िलाफ़ फैसला लिख दिया।

जिस दिन उसे फैसला सुनाना था, उस दिन वह सुबह कपड़े पहनकर अपनी कोठी के बरामदे में निकला और अपने नौकर से कहा कि उसे जूते पहनाए। वह एक कुर्सी पर बैठ गया। नौकर ने जूते पहनाकर उनके फीते बाँधने शुरू ही किए थे कि अचानक उसे "खट" जैसी आवाज़ सुनाई दी। उसने ऊपर नज़र उठाई तो देखा कि उसका मालिक बिना किसी सहारे के कुर्सी पर औंधे मुँह गिर पड़ा था।

जब उसने हाथ लगाकर देखा तो पता चला कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। ऐसा लगा मानो अचानक दिल की धड़कन बंद हो गई और उसी समय उसकी जान निकल गई।

उसके स्थान पर एक हिंदू को कार्यवाहक जज नियुक्त किया गया। उसने पहले जज द्वारा लिखा हुआ फैसला काट दिया और अहमदियों के पक्ष में फैसला दे दिया।

खाकसार अर्ज करता है कि मौलवी मुहम्मद इस्माईल साहिब, मौलवी फ़ाज़िल ने मुझसे बताया कि मैं एक बार कपूरथला गया था। वहाँ मैंने देखा कि वहाँ की जमाअत ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह वाक्य—

"यदि मैं सच्चा हूँ, तो मस्जिद तुम्हें मिल जाएगी।"

को सुंदर और बड़े अक्षरों में लिखवाकर उसी मस्जिद में लगवा रखा है।

खाकसार अर्ज करता है कि कपूरथला की जमाअत बहुत पुरानी जमाअत है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुराने और सच्चे निष्ठावान अनुयायियों में से है।

मैंने यह भी सुना है कि उनके पास हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक लिखित पांडुलिपि है, जिसमें लिखा है:

"मुझे आशा है कि जिस प्रकार कपूरथला की जमाअत ने दुनिया में मेरा साथ दिया है, उसी प्रकार जन्नत में भी मेरा साथ देगी।"

शेष ..

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad